ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

फरवरी 2016

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

तप:पूत आचार्य श्री बलदेव जी को शतशः नमन्

आचार्य बलदेव जी के अन्तेष्टि संस्कार में उपस्थित बाएं से आचार्य हरिदत्त, आचार्य विजयपाल जी, श्री धर्मदेव जी एवम् स्वामी धर्ममुनि जी।

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

निःशुल्क बृहदयज्ञ एवं ध्यान योग शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी निःशुल्क बृहदयज्ञ एवं ध्यान योग विज्ञान शिविर सोमवार दिनांक 28 मार्च से रविवार 03 अप्रैल 2016 तक आयोजित किया जायेगा। आप सभी साधको से निवेदन है कि अभी से आने की अपनी तिथि निश्चित कर लें। आवास और भोजन की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। अभी से सूचना देकर अपना स्थान निश्चित करने की कृपा करें।

सम्पर्क सूत्रः 9416054195

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

912

ऋषि राम कुमार
सैक्टर-5, गुड़गांव

913

कालू राम
सुपुत्र श्री नानक चन्द्र सैनी
बैट्री हाउस, फर्रूखनगर

914

ओम प्रकाश जी
जमालपुर की ढाणी
फर्रूखनगर

915

श्री संजय अग्रवाल
सुपुत्र श्री महेन्द्र कुमार अग्रवाल
अनाज मण्डी गेट, बहादुरगढ़

प्रिय बन्धुओं! मास फरवरी में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी मार्च अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

माघ-फाल्गुन सम्वत् 2072 फरवरी 2016

सृष्टि सं. 1972949116 दयानन्दाब्द 191

वर्ष-15) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-2

(वर्ष 46 अंक 2)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com, rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	7
सम्पादकीय : इन्द्रो मुनीनाम्-सखा, इन्द्र मुनियों	8
जीवन क्या है?	9
सब मनुष्यों का एक ही धर्म	11
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	16
महर्षि दयानन्द का नवदम्पत्तियों व गृहस्थियों	19
काली खांसी	22
पेट में गैसः कारण व उचार	24
हंसो और हंसाओ	26
प्रहेलिका	26
नहीं मिलता	26
कुछ सवाल जवाब	27
पैसे का ग्रुप	28
भूत-प्रेत आदि की क्या वास्तव में कोई सत्ता है...	29
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

आत्मशुद्धि आश्रम में दी आचार्य बलदेव जी को श्रद्धांजलि

आर्य समाज के तपोनिष्ठ, गौभक्त व आर्ष विद्या प्रणाली के पुरोधा, समाज सेवा और राष्ट्रीय मूल्यों उत्थान के लिए समर्पित हरियाणा में संस्कृति के आन्दोलन के प्रतीक पुरुष संस्कृत भाषा और गौरक्षा को युगान्तर रूप देनेवाले महामनीषी बाबा रामदेव सहित सैकड़ो विद्वानों व युवकों के गुरु आचार्य और अपना समस्त जीवन आर्य समाज के लिए लगाने वाले सुयोग्य विद्वान आचार्य बलदेव जी का निधन दिनांक 28.01.2016 को प्रात: 06:24 बजे को हो गया। दिनांक 30.01.2016 को प्रातः काल यज्ञोपरान्त आत्मशुद्धि आश्रम में एक श्रृद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ, जिसमें उनको भावभीनी श्रृद्धांजलि समर्पित की गई। आश्रम के संस्थापक स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी और आचार्य बलदेव जी महाराज गुरुकुल झज्जर के मुख्य अध्यापक थे तो वहीं पर स्वामी धर्ममुनि जी जो उस समय धर्मबीर सन्तोषी के नाम से जाने जाते थे। गुरुकुल झज्जर के भण्डार की व्यवस्था के साथ-साथ अध्ययन का भी कार्य करते थे। श्री राजबीर जी आर्य जो वर्तमान में गुरुकुल झज्जर के मन्त्री हैं और आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी में हैं, उन्होंने बताया कि आचार्य जी आर्य समाज के लिए चीन की दीवार की तरह थे। उन्होंने अपने जीवन में 150 से भी अधिक गौशालाओं की स्थापना की। श्री सत्यपाल वत्स व अशोक जून ने कहा कि आचार्य जी की क्षति की पूर्ति होना बड़ा कठिन है। इस अवसर पर श्री विक्रमदेव शास्त्री, आचार्य राजहंस मैत्रेय व आश्रम में रह रहे साधक व साधिकाओं ने आचार्य बलदेवजी को स्मरण करते हुए उनका चला जाना आर्य समाज के लिए अपूर्णीय क्षति बताया। स्वामी धर्ममुनि जी ने बताया कि श्रृद्धेय आचार्य जी से उनका पुराना सम्पर्क व सान्निध्य होने के कारण मैं व्यक्तिगत रूप से बहुत आहत हूँ। मैं भी उनको अपनी तथा अपने समस्त ट्रस्टियों एवं सदस्यों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

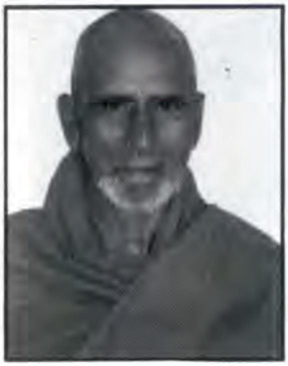

श्री सोमनाथ आर्य दिवंगत

श्रद्धेय मा. सोमनाथ आर्य एक प्रमुख समाजसेवी, कर्मठ कार्यकर्त्ता, शालीनता एवं योग्यता की प्रतिमूर्ति थे। उनका जन्म 6 जनवरी 1943 में डेरावाली खां (पाकिस्तान) में हुआ था। उनके पिता शिक्षाविद थे तथा मा. जी भी दिल्ली में अध्यापक रहे। आप आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ व फर्रूखनगर के विशेष सहयोगी रहें। हर समय आश्रम सहयोग के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

31 जनवरी 2003 में सेवानिवृत होने के बाद उनका केवल कार्य आर्य समाज एवं आर्य समाज की संस्थाओं को आगे ले जाना रहा। उन्होंने आर्य केन्द्रीय सभा को नया नेतृत्व दिया। वर्षो तक आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री एवं मृत्युपर्यन्त आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान, आर्य समाज अर्जुन नगर के 16 वर्षो तक प्रधान आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय के वर्षो तक महामन्त्री एवं अन्त में वरिष्ठ उपप्रधान वैदिक कन्या वरिष्ठ विद्यालय के उपप्रधान आर्य ऐजुकेशन सोसायटी (DAV School) के प्रधान अन्तिम समय तक रहे। वे हमेशा मुस्कराते हुए, दयानन्द के कार्यो को करते रहते थे। दयानन्द के प्रचार को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए वे आर्य यात्रायें भी आर्यजनों को करवाते थे। हर वर्ष टंकारा भी आर्यजनों की बस लेकर आते थे। उनके निधन से गुड़गांव की पूरी जनता दु:खी है। उनकी श्रद्धांजलि सभा में हजारों की संख्या इस बात का परिचायक थी। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि ऐसे संत को अपने चरणों में निवास दे। उनकी कमी वर्षो तक खलेगी। उनके परिवार बेटा विकास आर्य, बेटी, मंजू आर्य एवं आशु सचदेवा को प्रभु दु:ख सहन करने की शक्ति दे। ऐसी भगवान से प्रार्थना करते है।

श्री दिलीप सिंह दिवंगत

गऊशाला एवं सैनी सभा के प्रधान रह चुके श्री दिलीप सिंह सैनी, फर्रूखनगर, गुड़गांव का दिनांक 21.01.2016 को देहावसान हो गया। जिनका आचार्य राजहंस मैत्रेय, श्री विक्रमदेव शास्त्री, ब्र. योगेन्द्र, वानप्रस्थी श्री ईश मुनि, स्वामी हरीश मुनि आदि ने मन्त्रोचार के साथ अन्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से कराया। तत्पश्चात प्रार्थना सभा की और घर पर जाकर यज्ञ के द्वारा गृह की शुद्धि की। आप ईमानदार, परोपकारी, समाज सेवी रहें। अपने पीछे पुत्र पौत्रों सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गये है। आपकी शोक सभा यज्ञ सत्संग के साथ स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में सम्पन्न हुई।

माता गिन्नो देवी दिवंगत

श्री प्रेमचन्द श्री बंसल व श्री श्याम लाल जी बंसल काठमण्डी, बहादुरगढ़ की पूज्य माता श्रीमती गिन्नोदेवी का दिनांक 23 दिसम्बर 2015 को देहावसान हो गया। जो अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गयी है। वे संघर्षशील, कर्त्तव्य परायण एवं अपने दायित्वों को प्रति सजग रही। पति के चले जाने के बाद उन्होंने बच्चों का पालन पोषण किया और योग्य बनाया। उनकी शान्ति सभा स्वामी धर्ममुनि जी आत्मशुद्धि आश्रम के सानिध्य में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर राजनैतिक एवं अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। —राजहंस मैत्रेय

21 किलो घी से गायत्री महायज्ञ का आयोजन

वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर के तत्वावधान में नववर्ष के उपलक्ष्य में गांव ग्वालिशन में बाबा सुखीराम मन्दिर के प्रांगण में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जिसमें 21 किलो गांय की घी व 40 किलो ओषधि युक्त हवन सामग्री का प्रयोग किया गया। कार्यक्रम कि अध्यक्षता पं. रमेश कौशिक समिति अध्यक्ष ने की और यज्ञ ब्रह्मा, ब्रहमचारी सुभाष आर्य व सुबेदार भारतीय रहे। जिसमें यजमान गांव के ग्रामीण नरेश, नरेन्द्र, राजेन्द्रगिरी, जोगिन्द्र, गायक राजा, नरेन्द्र सुहाग, अशोक भारोत, जीतसिंह, बिन्ने, आनन्द,मा. परम, मा. हरीश, अजीत सत्यवान, सत्यवीर, राजबीर फोजी अंजलि, रामकौर, शान्ति आदि अनेक महिला पुरुष वे बेटिया रहा। ओ३म के जाप व उच्चारण ने जीवन में चमत्कारिक प्रभाव पड़ता है। इस कार्यक्रम में गांव में सैकड़ों महिला पुरुष व युवक युवतियों ने लिया। इस अवसर पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ओ का आह्वान किया गया।

युवा चेतना शिविर सम्पन्न

आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी महासमुन्द्र में 23 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2015 को राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के अनेक विद्यालयों के छात्रों ने योगासन, जूडो कराटो के साथ-साथ वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त किये। इस शिविर के साथ-साथ अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की भी पूर्णाहुति 27 दिसम्बर को की गई। इस सम्पूर्ण आयोजन के प्रेरणाश्रोत स्वामी धर्मानन्द सरस्वती व गुरुकुल के आचार्य कोमल कुमार ने अपने सहयोगियों के साथ इस आयोजन को सुव्यवस्थित सम्पन्न किया।

नामकरण संस्कार सम्पन्न

श्री छोटे लाल जी आर्य ठाणी साल्हावास झज्जर ने अपने पौत्र आयुष्मान देव व्रत सुपुत्र श्री दिनेश आर्य का नामकरण संस्कार स्वामी धर्ममुनिजी महाराज आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के सानिध्य में यज्ञ सत्संग पूर्व की दिनांक 24.01.2016 को अपने आवास पर हर्षोल्लास के साथ किया। इस अवसर पर विक्रमदेव शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया। स्वामी जी ने यजमान एवं आयुष्मान बालक को सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। श्री रामदेव जी आर्य ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर परिवार के सम्बन्धी तथा अन्य लोग उपस्थित रहे तथा सबके लिए भोजन की सुव्यवस्था की गयी।

❑❑❑

श्री हरपाल सिंह जी जो नियावास गुड़गांव ने अपने आवास पर दिनांक 24.01.2016 को अपने पौत्र आयुष्मान वेदान्त सुपुत्र श्री अभिमन्यु का नामकरण संस्कार यज्ञ सत्संग पूर्वक उल्लास के साथ मनाया।

इस अवसर पर आचार्य राजहंस मैत्रेय जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। उन्होंने सन्तान निर्माण पर विशेष बल देते हुए परिवार जनों के कर्त्तव्य को विस्तार से चर्चा की और सामूहिक रूप से यजमान एवं बालक को आशीर्वाद दिलाया।

वानप्रस्थी हरीश मुनि जी, वानप्रस्थी ईशमुनि जी, अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर द्वारा भजनों का सुन्दर कार्यक्रम चला। इस अवसर पर परिवार की ओर से सामूहिक भोजन का आयोजन किया गया।

जीवन बहुमूल्य है इसका विवेक पूर्वक उपयोग ही मानव मात्र के लिए हितकारी है। अन्यथा यह कम भयावह नहीं।

जन्म दिवस मनाया गया

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की भव्ययज्ञशाला में वयोवृद्ध श्री बृजपाल श्री सहगल का 87वां जन्म दिवस दिनांक 18.01.2016 यज्ञ सत्संग के साथ मनाया गया। स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में आचार्य राजहंस जी मैत्रेय द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी जी ने सामूहिक रूप से यजमान को शुभकामनाए दिलायी। आचार्य राजहंस जी मैत्रेय एवं स्वामी रामानन्द जी ने प्रसन्नचित एवं स्वस्थ जीवन पर प्रकाश डालते हुये वृद्धावस्था भी बहुत सी समस्या एवं उनके निदान को बिस्तार से बताया। स्वामी धर्म मुनि जी ने उपसंहार करते हुए सहगल को दीर्घायुष्य की कामना की।

मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर का मासिक संत्सग दिनांक 09.01.2016 को यज्ञ-प्रवचन के साथ सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में विक्रमदेव शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया श्री केशरदास जी व वानप्रस्थी हरीशमुनि जी ने सुन्दर भजनों का कार्यक्रम रखा। श्री सत्यपाल जी आर्य ने स्वास्थ्य एवं व्यवहार पर रोचक प्रेरणा प्रदान की। आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने आध्यात्मिक यात्रा पर सुरूचि पूर्ण प्रवचन किया। स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी चर्चाओ का समापन करते हुए आगामी कार्यक्रम पर विचार किया। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। इस अवसर पर स्थानीय गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण सम्पन्न

छ.ग. संस्कृत विद्यामण्डलम् और गुरुकुल कोसरंगी के संयुक्त तत्वावधान में 5 दिवसीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण दिनांक 01.01.2016 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. गणेश कौशिक (अध्यक्ष संस्कृत विद्यामंडलम्) अजय विश्वास (सहायक संचालक) डॉ. सुरेश शर्मा (सचिव) संस्कृत विद्या मंडलम् पी.के. शर्मा, महासमुन्द, आचार्य कोमल प्राचार्य गुरुकुल कोसरंगी, योगेश्वर उपाध्याय राजिम, आचार्य सुखेन्द्र व्याख्याता संस्कृत संयोजक श्रीमती शकुन्तला शर्मा की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

वेद सन्देश

अविनाश का उपाय

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

सघा वीरो न रिष्यति, यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः।
सोमो हिनोति मर्त्यम्॥ ऋग 1.18.4

ऋषि:**मेधातिथि:काण्व:**। देवता **इन्द्र, ब्रह्मणस्पति:सोमश्च**। छन्द: **गायत्री**।

(**स:**) वह (**वीर:**) वीर (**घ**) निश्चय ही (**न**) नहीं (**रिष्यति**) क्षतिग्रस्त और विनष्ट होता है, (**यं**) जिस (**मर्त्य**) मर्त्य को, मरणधर्मा को (**इन्द्र:**) इन्द्र, (**ब्रह्मणस्पति:**) ब्रह्मणस्पति (**और**) (**सोम:**) सोम (**हिनोति**) बढ़ाता है।

क्या तुम वीर हो और तुम्हें यह विश्वास है कि जगत् की बीहड़ पगडंडी पर चलते हुए तुम किसी शत्रु से क्षतिग्रस्त या विनष्ट नहीं होगे? पर कहीं ऐसा तो नहीं हैं कि समय आने पर तुम्हारा यह विश्वास असत्य सिद्ध हो और तुम हृदय में एक वेदना लिये हुए सिसको, चिल्लाओं, शोर मचाओ कि अरे मैं तो मारा गया, मेरा तो सब-कुछ लूट गया, मैं तो क्षत-विक्षत हो गया। यदि तनिक भी तुम्हें अपने ऊपर सन्देह है,जरा भी मन कहता है कि विपदा आने पर सुरक्षित बच निकलना कठिन है, अचलायमान होकर दृढ़ता के साथ अविनष्ट बने रहना दुष्कर है, तो आओ, कान खोलकर अविनाश का वेदोक्त उपाय सुनो। अविनाश! अविनाश! कितना महान शब्द है। कितना कुछ इसके अन्दर छिपा हुआ है। आत्मिक अविनाश, भौतिक अविनाश, वैयक्तिक अविनाश, राष्ट्रीय अविनाश! पग-पग पर मनुष्य विनष्ट होता है, चरित्र से विनष्ट होता है, धर्म से विनष्ट होता है, सम्पत्ति से विनष्ट होता है, राष्ट्रीयता से विनष्ट होता है। उस सकल विनाश से बचना कितनी बड़ी/उपलब्धि है? वह प्राप्त होती है उस मर्त्य को, जिसे इन्द्र, ब्रह्मणस्पति और सोम बढ़ाते हैं। 'इन्द्र' है अग्रगामिता का, शौर्य का, अविचलता का, रिपु-विदारण का और परमैश्वर्यशालिता का प्रतिनिधि। वैदिक वर्णन इन्द्र की इन विशेषताओं से भरे पड़े हैं। हम अपने अन्दर भी इन्द्र के इन गुणों को ग्रहण कर सकते हैं। 'ब्रह्मणस्पति' ज्ञान, महत्ता, विशालता, वृद्धि, ब्रह्मवर्चस आदि का प्रतिनिधित्व करता है। ब्रह्मणस्पति के इन आदर्शो को हम अपने अन्दर प्रतिबिम्बित कर सकते हैं। 'सोम' है शान्ति, रसमयता, समस्वरता सर्जनशीलता, सत्प्रेरणा आदि का प्रतिनिधि। अत: वैदिक सोम से इन विशेषताओं को हम प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार ये तीनों देव, परमेश्वरी सत्ता के ये तीनों रूप, जब हमारी वृद्धि एवं समुन्नति में संग्लन हो जायेंगे, तब संसार की कोई शक्ति हमें नीचा नहीं दिखा सकेगी, क्षतिग्रस्त या त्रिनष्ट नहीं कर सकेगी। अन्यथा मनुष्य तो मर्त्य है, मरणधर्मा है, इन देवों से यदि वह शक्ति और सन्देश नहीं लेगा, तो कोई भी बाह्य या आन्तरिक रिपु उसे घर दबोचेगा और प्रहारों से जर्जर करके विनष्ट कर डालेगा।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

सम्पादकीय

इन्द्रो मुनीनाम्-सखा, इन्द्र मुनियों का सखा-मित्र है

सामवेद ऋचा की यह सूक्ति बडी ही कल्याणप्रद है। यद्यपि वेदो में मानव उत्थान के उपदेश हैं। फिर भी कुछ बातें सहज और सरल ढंग से प्रेरित करती हैं। उन्हीं सहज और सरल बातों में यह एक है कि ऐश्वर्य शाली परमात्मा मुनियों का मित्र है। इसे समझने के लिए पहले मुनि शब्द को समझना पड़ेगा और जब मुनि शब्द समझ में आ जायेगा तो परमात्मा मुनियों का मित्र है यह भी समझ में आ जायेगा। **मौनात् मुनिः**। अर्थात् मौन होने से मुनि है। मौन, वाणी और विचार के रूक जाने से होता है। अधिकतर लोग केवल वाणी के रूक जाने से ही मौन समझ लेते हैं और वाणी रोकने की साधना में ही लगे रहते हैं। जो अधिक महत्वपूर्ण नहीं। कुछ लोग वाणी के साथ विचारो से भी मौन होने की साधना करते हैं वे ही यथार्थ में मुनि होते हैं। इसी अवस्था को पतंजलि मुनि योग दर्शन में कहते हैं कि जब चित्त की वृत्तियों का निरोध हो जाता है तो वही योग है। इसी को दूसरे शब्दों कपिल मुनि कहते हैं-**ध्यानं निर्विषयं मनः**। जब मन निर्विषय हो जाता है तो ध्यान है। यहां मौन-योग और ध्यान समानार्थक हो जाते हैं। जब मन योग-ध्यान और मौन अवस्था को प्राप्त होता है तो मन निर्मल स्थिर और पारदर्शी हो जाता है। उस अवस्था में द्रष्टा की अपने निज स्वरूप में अवस्थिति होती है और परमात्मा का साक्षात्कार होता है। परमात्मा ही ऐश्वर्यशाली इन्द्र हैं। जिसे मौन में मुनि प्राप्त करता है या मुनि उस इन्द्र से जुड़ जाता है। फिर वही इन्द्र-परमात्मा मुनि का सखा होता है जिससे मुनि परम शान्ति का अनुभव करता है। दूसरा मुनि शब्द का अर्थ होता है-**मननात् मुनिः**। जो सत्य का मनन या विचार करता है वह मुनि है विचार दो अवस्थाओं में होता है एक वह जिसमें विचार कर्त्ता को विचार करते समय अपना बोध हो। दूसरा वह जिसमें विचार कर्त्ता को विचार करते समय अपना बोध न हो। विचार कर्ता को विचार करते समय जब अपना और अपने विचार का बोध होता है तो वह विवेक पूर्ण अवस्था मानी जाती है। उसे ही नियन्त्रित अवस्था माना जाता है। इस अवस्था में मुनि को विचार करना होता है तो वह करता है। और नही करना होता है तो नहीं करता। मन निर्विचार शान्त अवस्था में होता है। वही अवस्था ध्यान-योग और मौन है। जिसमें साधक आत्म साक्षात्कार करता हुआ उस ऐश्वर्यशाली से जुड़ जाता है जिसमें वह मुनि उस इन्द्र का सखा हो जाता है।

दूसरी मनन व विचार की वह अवस्था होती है जिसमें विचार तो चलता है परन्तु विचार कर्ता को स्वयं को बोध नहीं होता वह वृत्ति के समान ही अपना स्वरूप समझता है इस अवस्था में जो मनन या विचार चलता है उसे अचेतन अवस्था या अविद्याग्रस्त हुआ कार्य माना जाता है जो अनियन्त्रित होता है उसे किसी प्रकार भी योग-ध्यान या मौन नही कहा जा सकता। इस अवस्था वाले को मुनि भी नही कहा जा सकता क्योकि वह वाणी विचार से पूर्णतया मौन नहीं है इसलिए ऐसा व्यक्ति इन्द्र का सखा नहीं बनता।

प्राकृत भाषा में भी **असुत्ता मुनि** ऐसा कहा गया है। यानि जो सोया नहीं है वह मुनि है। इसका भी यही अर्थ है कि जो जागा हुआ है वह समस्त अपने मानसिक कार्य विवेक पूर्ण अवस्था में करता है। वह जागी हुई अवस्था ही शब्दान्तर से योग-ध्यान ओर मौन कहलाती है उस योग-ध्यान ओर मौन की अवस्था में हमारा मन पूर्णतया शान्त और निर्मल होता है मन की निर्मलता, स्थिरता में ही वह ऐश्वर्यशाली इन्द्र उस मुनि का सखा-मित्र होता है। **-राजहंस मैत्रेय**

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

जीवन क्या है?

- आचार्य प्रद्युम्न

जीवन क्या है? जब हम इसकी खोज करने में जुटते हैं तो पता चलता है। विभिन्न मनुष्य जो कुछ भी जानकर या मानकर कर रहे हैं वे जीवन के ही विविध अंग या विविध रूप हैं। कोई कृषि कर रहा है, कोई किसी के यहाँ मजदूरी कर रहा है,कोई सिपाही है, कोई अध्यापक, कोई वैज्ञानिक एकान्त में रहता हुआ अहर्निश अपनी किसी खोज में ही लीन है, कोई राजनेता है, कोई व्यापारी, कोई उद्योगपति है, कोई खिलाड़ी, कोई नदी के किनारे बैठा हुआ, मछली पकड़ रहा है, कोई उत्सव मना रहा है, कोई अपने प्रिय सम्बन्धी के वियोग में बैठा रो रहा है, कोई आपस में लड़ रहा है, कोई स्त्री-पुत्र, परिवार के मोह में डूबा हुआ है, कोई इन सब को छोड़कर एकान्तवास कर रहा है, कोई विविध सम्बन्धों को जीवन की एक विशिष्ट सारभूत चीज के रूप में देखता है तथा दूसरा इसे कुछ महत्व ही नहीं देता, कुछ युवक-युवति कामवासना में जल रहे हैं, कोई समस्त विकारों से ऊपर उठने की साधना में जुटा हुआ है, कोई ध्यान में रस लेता है तो कोई भीड़ में, कोई अपनी आजीविका मात्र चलाने में ही व्यस्त है तो कोई सामाजिक कार्यो में अपना समय लगा रहा है, कोई अपने को समझने के लिए भगीरथ प्रयत्न कर रहा है तो दूसरे केवल इन दिखाई देने वाली चीजों को ही सारा महत्व दे रहे हैं, कुछ महिलायें खेत से भारी बोझा उठाकर बात करते हुए चली आ रही है, दूसरी विविध रंग बिरंगे वस्त्रों और केश विन्यास से अपने को सजा रही है, कुछ सदा सर्वत्र शान्ति में डूबे रहते हैं तो कुछ एक को झगड़ा किये बिना ऐसा लगता है कि आज कोई आवश्यक कार्य छूट गया है, कुछ मन-वाक्-कार्य को हर समय संयमित रहते हैं तो कुछ पूरे स्वेच्छाचारी है, कुछ त्यागी, तपस्वी और संन्यासी के रूप है तो दूसरे गृहस्थ: कुछ महास्वार्थी होकर अपने ही सुखों की चिन्ता कर रहे तो कुछ कष्ट उठाकर भी दूसरों को अधिक से अधिक सुख देना चाहते हैं, पशुओं के रक्षण में लगे हुए हैं तो कुछ वृक्षारोपण में, कुछ वन-उपवन फल-फूल प्रकृति के सौन्दर्य में बहुत रूचि ले रहे हैं तो दूसरों का स्वच्छता व सौन्दर्य की तरफ कोई ध्यान नहीं है। ये सब जीवन के ही अनेक रूप हैं।

व्यक्ति के अपने संस्कार तो होते ही हैं, साथ में जिस परिवेश या वायुमण्डल में रहता है उसका भी जीवन के चयन या निर्धारण में विशेष योगदान रहता है। ऋषि आश्रम में पले हुए बालक की अभिरूचियाँ उससे अलग होंगी जो आकण्ठ भोगों में डूबे हुए गृहस्थों के यहाँ पल रहा है। जीवन को जब सामान्य या विशेष अथवा विकसित या अविकसित रूप में देखा परखा जाता है तो यद्यपि अलग अलग व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोण से ही इसका उत्तर देते हैं। एक सांसारिक व्यक्ति के लिए तो निश्चय ही साधनसम्पन्नता, बहुत सारी उपाधियों से विभूषित होना, ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित रहना, मान-सम्मान की प्रति, अच्छा भवन, अच्छा व्यापार, अच्छे पढ़े-लिखे बच्चे-ये चीजें ही विकसित जीवन की श्रेणी में गिनी जाती हैं। यहां तक कि इस विचार वाले लोग साधु-महात्माओं की महत्ता या बड़प्पन का निर्धारण भी इन्हीं चीजों से करते देखे जाते हैं कि इस महात्मा जी के लाखों शिष्य हैं-राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री और बड़े-बड़े उद्योगपति इनके पास आते हैं, इनका इतना सुन्दर आश्रम है, इनके पास चलने के लिए बहुत अच्छी-अच्छी गाड़ियाँ हैं, अपार धनसम्पत्ति है, इन्हें करोड़ों रूपये दान में मिलते हैं। जिनकी दृष्टि बाहर की तरफ खुली हुई है वे इन बाह्य साधनों, बाह्य स्थितियों के द्वारा ही जीवन का मूल्यांकन किया करते हैं। पर ज्ञानी पुरुष की दृष्टि में इन सब चीजों के होने या न होने से जीवन के विकास का कोई सम्बन्ध नहीं होता। किसी परिस्थिति या कारणवश ये चीजें नहीं है या बहुत हैं, ज्ञानी के लिए इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता, क्योंकि वे अन्दर की तरफ देखते हैं, वे बाहर भी देखते हैं तो अन्दर से देखते हैं। अतः जीवन के विकास को मापने वाले पैमाने उनके लिए अलग ही होते हैं।

जो जीवन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या आदि विकारों से भरा हुआ है, प्रतिक्रियाओं में जिया जा रहा है, जिसमें मन व इन्द्रियों विषयों से प्रभावित रहती हैं, टेंशन-डिप्रेशन का जहाँ पूर्ण साम्राज्य है। आशा-निराशा हर्ष-शोक जहाँ पीछा करते रहते हैं।

अतृप्ति-अशान्ति से जहाँ व्यक्ति क्लेशित होता रहता है। इस प्रकार के जीवन को ज्ञानी पुरुष अविकसित, अपूर्ण व सामान्य ही समझते हैं फिर बेशक वहाँ कितना भी धन वैभव, उच्चपद या मान-सम्मान अथवा योग्य पुत्र-पुत्रियाँ व शिष्य मण्डली की अपार भी है क्यों न लगी हुई हो।

ज्ञानी की आंखें जीवन की पूर्णता को इस रूप में देखती हैं कि उसका अपने आप पर कितना अधिकार है? वह मन, प्राण इन्द्रियों व विचार का स्वामी है या गुलाम? जैसे किसी सचेत गाड़ी चालक की इच्छा के बिना गाड़ी इधर-उधर नहीं मुड़ती, अपने निर्धारित मार्ग पर चलती रहती है, उसी प्रकार उसका मन, प्राण व शरीर एक क्षण के लिए भी अनियंत्रित तो नहीं होते? सामान्य जीवन में व्यक्ति सर्वदा शब्द में, रूप में, रस में, स्पर्श में, गन्ध में ही उलझा रहता है। हाँ! यह कल्पना से भी परे की बात मानी जाती है कि कोई किसी के प्रति अपमानजनक शब्द बोले या व्यवहार करे और सुनने वाला सुनकर उसको वहीं छोड़ दे। सुन्दर रूप से उसके मन में कोई तरंग न उठे। किसी के मान-सम्मान को देखकर उसका मन शान्त बना रहे। विषय सुख में लीन संसार को देखकर उसके मन में उस सुख की इच्छा भी न जगे।

बहिर्मुखी जीवन में ये सब बातें असम्भव जैसी समझी जाती हैं और हैं भी, पर ज्ञानी पुरुष का जीवन ऐसे दृढ़ आधार पर प्रतिष्ठित होता है कि वह संसार की किसी भी घटना, परिस्थिति, दिखावे से विचलित नहीं होता। बाहर की ये सारी की सारी चीजें उसके मन में कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करती। उनकी उपस्थिति हो या अनुपस्थिति, उसका मन तटस्थ भाव से शानत बना रहता है। ज्ञानी अपनी समस्त ऊर्जा को इसी स्थिति को प्राप्त करने में व्यय करता है, इसके सिवाय उसका मन कहीं भी नहीं रमता। जीवन का यही रूप उसे प्रकृष्टतम दिखायी देता है। वस्तुतः वह व्यक्ति कितना भाग्यशाली है जिसमें एक क्षण के लिए भी दुःख, पीड़ा, क्लेश, आकर्षण-विकर्षण, अज्ञान, आदि न हों। ऐसे ज्ञानवान् के लिए हमारा प्रणाम है।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	32.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	40.00	रु. प्रति किलो
विशेष	50.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	70.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	125.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

सब मनुष्यों का एक ही धर्म

- आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। पाँच हजार वर्ष पूर्व तक वेद मत से भिन्न कोई दूसरा मत नहीं था। आज सारा संसार धर्म के नाम पर लड़ रहा है। क्या सब मनुष्यों का 'एक ही धर्म' होना संभव है? क्या महर्षि दयानन्द की यह परिकल्पना असंभव है कि परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करे!। लेख पुराना अवश्य है, पर अधिकारी विद्वान का विचार नित्यनूतन है।

जब परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य को उत्पन्न करके उसे आंखे दी थी, उसी समय उसकी आंखों को सहायता देने के लिए सूर्य का प्रकाश भी दे दिया था। मनुष्य आंखें खोलकर चले और सूर्य के प्रकाश से सहायता ले तो उसे पता लगता रहेगा कि झाड़ों-झंखाड़ों, कांटे-कंटीलों, ईट-पत्थर, गड्ढे-टीलों आदि से रहित, साफ-सुथरा और अपने गंतव्य स्थान तक पहुंचने का सीधा मार्ग कौन सा है। इसी भांति हमारी मन की, बुद्धि की आंखों की सहायता देने के लिए प्रभु ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद रूपी सूर्य के ज्ञान का प्रकाश भी दे दिया था। हम मन से, बुद्धि से, विचारपूर्वक वेद का अध्ययन करें और वहाँ से जो ज्ञान प्राप्त हो उसे भली-भांति समझ लें तो हमें पता चलता रहेगा कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। वेद से प्राप्त इस ज्ञान के अनुसार आचरण यदि हम करने लग जाएं तो हमारा जीवन सभी दृष्टियों से पूर्ण सफल बन जाएगा। वेद का यह उपदेश किसी विशेष देश और किसी विशेष जाति के लिए नहीं है। यह उपदेश प्रभु ने धरती पर रहने वाले सभी मनुष्यों और सभी जातियों के लिए दिया है, जिससे मानव मात्र अपने जीवन को सब प्रकार की सुख समृद्धि से भरपूर बना सके। इस प्रकार वेद के उपदेश, वेद का धर्म सार्वभौम है।

वेद का धर्म सबके लिए: वेद में प्रभु ने स्वयं कहा है मैं वेद की इस कल्याणकारिणी वाणी को सब मनुष्यों को उनके कल्याण के लिए दे रहा हूँ। (यजु. 26/2) एक दूसरे स्थान पर वेद इसी सम्बन्ध में कहता है कि 'हे मनुष्यों, मैंने माता की भांति कल्याण करने वाले वेद को तुम्हारे लिए प्रस्तुत कर दिया है, वेद का यह ज्ञान मनुष्य को उद्यमशील बना देता है, और उसके हृदय व मन को पवित्र कर देता है, इसके ज्ञान से तुम्हें लम्बी आयु प्राप्त होगी, बलिष्ठ प्राण-शक्ति प्राप्त होगी, गौ आदि उपयोगी पशु प्राप्त होगें, कीर्ति प्राप्त होगी, धन-सम्पत्ति प्राप्त होगी, ब्रह्मतेज प्राप्त होगा और अन्त में ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष प्राप्त होगा, जिससे तुम ब्रह्मानन्द रस का पान कर सकोगे। (अथर्व 19.71.1)

वेद के इन और ऐसे ही अन्य स्थलों से अत्यन्त स्पष्ट है कि वेद का धर्म मानवमात्र के लिए दिया गया सार्वभौम धर्म है। हम वेद के प्रचारकों की भी यही मान्यता है। हम मानव मात्र के कल्याण को लक्ष्य में रखकर वेद का धरती भर में प्रचार करना चाहते हैं। वेद के उपदेश व्यक्ति और समाज में मनुष्य के लिए कितने हितकारी हैं और उसे कितना ऊँचा उठाने वाले हैं, इसे दिखाने के लिए हम यहाँ वेद की कुछ शिक्षाओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

सब मनुष्य भाई-भाई:- वेद कहता है कि 'ईश्वर हम सब मनुष्यों का माता और पिता है' (ऋ 8.18.11) और 'हम उस अमर परमात्मा के पुत्र है। (ऋ 10.13.1) इसका स्पष्ट भाव यह है कि हम धरती के सब मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। हम सबको एक दूसरे को आपस में भाई की दृष्टि से देखना चाहिए तथा जिस प्रकार एक माता से उत्पन्न भाई एक दूसरे की सहायता करने और एक दूसरे का कष्ट दूर करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं उसी प्रकार हम सब परमात्मा के पुत्रों को भी एक दूसरे ही सहायता करने और एक दूसरे का कष्ट दूर करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। किसी मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य की किसी प्रकार की हानि नहीं करनी चाहिए और उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहिए, प्रत्युत उसके कष्ट दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। यहाँ तक कि पशु-पक्षियों को भी कष्ट नहीं देना

चाहिए, वे भी परमात्मा के पुत्र हैं और हमारे भाई ही हैं।

सभी प्राणी हमारे मित्रः वेद का उपदेश है कि 'हमें प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए और ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि सभी प्राणी हमें मित्र की दृष्टि से देखें, सभी को आपस में एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए। (यजु. 36.18) मित्र का शब्दार्थ स्नेह करने वाला होता है। इसका एक अर्थ मृत्यु से, विनाश से, रक्षा करने वाला भी होता है। मित्र आपस में एक दूसरे से स्नेह किया करते हैं और एक दूसरे की विनाश से तथा सभी प्रकार की हानियों से रक्षा किया करते हैं। हमें प्राणी मात्र को अपना मित्र समझ कर उनसे स्नेह करना चाहिए और स्नेही मित्रजिस तरह एक दूसरे का हित किया करते हैं उसी प्रकार प्राणी मात्र का हित करने में हमें तत्पर रहना चाहिए। जैसे स्नेही मित्र एक दूसरे की विनाश से रक्षा किया करते हैं, उसी प्रकार हमें देखना चाहिए कि कोई प्राणी अपनी किसी गलती के कारण विनाश को न प्राप्त हो जाये,कोई हानि न उठा ले। हमें उसकी भूल सुधारने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। हमें अपनी ओर से तो किसी के विनाश में और किसी की हानि करने में प्रवृत्त होना ही नहीं चाहिए।

निःस्वार्थ स्नेह से विश्व की एकताः- हमें आपस में एक दूसरे को कितने गहरे प्रेम से देखना चाहिए, इस सम्बन्ध में वेद के द्वारा परमात्मा आदेश देते हैं कि 'हे मनुष्यों, तुम सब अपने हृदय एक बनाकर रखो, अपने मन एक बना कर रखो, तुम आपस में द्वेष मत करो, तुम सब आपस में एक दूसरे को इस प्रकार प्रेम से चाहो जिस प्रकार कि एक गौ अपने ताजे पैदा हुए बछड़े को चाहा करती है (अथर्व 03. 30.1) प्रेम की प्रगाढ़ता को दिखाने के लिए वेद ने बछड़े और गौ की इस उपमा में कमाल कर दिया है। मनुष्य माता के अपने पुत्र के प्रति प्रेम में तो फिर भी कुछ स्वार्थ छिपा रहता है कि यह कभी आगे भविष्य में मेरी सेवा करेगा और मुझे सुख देगा, परन्तु गौ में अपने ताजे पैदा हुये बछड़े के प्रति प्रेम में इस प्रकार का तनिक सा भी स्वार्थ छिपा नहीं होता। आगे चलकर कुछ अरसे के बाद तो ये एक दूसरे को कतई भूल जाते हैं। उन्हें यह भी बिल्कुल स्मरण नहीं रहता कि यह मेरा पुत्र और यह मेरी माता है। गौ का बछड़े के प्रति निःस्वार्थ प्रेम रहता है। हम सब मनुष्यों में, चाहे हम किसी राष्ट्र के निवासी हों और चाहे सारी धरती के निवासी हों, आपस में इतना गहरा प्रेम रहना चाहिए कि जितना गौ का ताजे उत्पन्न हुए अपने बछड़े के प्रति होता है। इतने गहरे प्रेम में भरकर एक दूसरे का हित साधन करना चाहिए। तभी राष्ट्रों व धरती के सब निवासी भरपूर उन्नति कर सकेंगे और अपने प्रदेशों और घरों को सुख का धाम बना सकेंगे।

कोई बड़ा या छोटा नहींः-वेद मनुष्यों में परस्पर के व्यवहार में ऊंच-नीच के विचार और बर्ताव को स्वीकार नहीं करता। वेद आपस के व्यवहार में पूर्ण समानता और सम्मान के आचरण का उपदेश करता है। वेद में कहा गया है कि मनुष्यों में कोई बड़ा और कोई छोटा नहीं है, सब आपस में भाई हैं, सबको मिलकर अपने राष्ट्र और समाज के सौभाग्य की वृद्धि करनी चाहिए, परमात्मा सब का पिता है और पृथ्वी सबकी माता है, ऐसा जानकर सब भाई-भाई की भांति मिलकर काम करेंगे तो धरती माता सबके लिए भांति-भांति के ऐश्वर्य और भोग प्रदान करेगी तथा सबके जीवन के दिन सुदिन बने रहेंगे। (ऋ 5.60.5) यदि वेद की इस शिक्षा पर किसी देश के सब लोग आचरण करने लग जाएँ तो उनका कितना कल्याण हो सकता है।

सबकी उन्नति में अपनी उन्नतिः मनुष्य समाज की सर्वतोमुखी उन्नति और सुख समृद्धि के लिए वेद में स्थान-स्थान पर अत्यन्त महत्वपूर्ण उपदेश दिये गये

आनन्दपूर्ण जीवन हेतु

दुःख, अशान्ति, तनाव, वैमनस्य आदि भावों को रूपान्तरित कर सुख शांति, प्रेम करूणा एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण, मानसिक दुर्भावनाओं से निर्जरा स्वयं के व्यक्तित्व का सम्यक् विकास और जीवन को आह्लादपूर्ण बनाने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित होने के लिए आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला झज्जर, हरियाणा में आप सादर आमन्त्रित हैं।

-राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

हैं। एक स्थान पर कहा है कि 'हे मनुष्यों, तुम एक दूसरे के लिए सुन्दर मीठी वाणी बोलो।' एक अन्य स्थान पर कहा है कि-'मनुष्यों, तुम्हारे पानी पीने के स्थान समान हों, तुम्हारा अन्न का सेवन समान हो, तुम स्नेह के बन्धन में समान रूप से बन्ध कर रहो, मिलकर ज्ञान स्वरूप परमेश्वर की उपासना करो और मिलकर अपने यज्ञ किया करो, तुम सब इस प्रकार मिलकर रहो जैसे कि रथ चक्र की नाभि के चारों ओर उसके अरे मिले हुये रहते हैं। (अथर्व.3.30.6) एक दूसरे स्थल पर वेद कहता है कि 'सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी हे, मनुष्यो, तुम सब परस्पर मिलकर रहो, मिलकर चलो, प्रेम से मिलकर बातचीत करो। तुम्हारे मन मिलकर परस्पर सहयोग से ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार कि तुम से पहले के विद्वान पुरुष मिलकर परस्पर सहयोग से विविध प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए अपने लिए ऐश्वर्य और अभ्युदय के अपने-अपने भाग को प्राप्त करते रहे हैं।' ऐश्वर्य के अभिलाषी तुम सबका गुप्त और गंभीर विषयों की मन्त्रणा करने, विचार करने का स्थान समान हो, जिसमें तुम समान रूप से जा सको, तुम्हारी राज्य सभाएं और दूसरी सभाएं समान हों, जिनके सदस्य सब बन सकें, तुम्हारा मन समान हो जिसमें परस्पर के लिए प्रेम हो, तुम्हारा मन से प्राप्त किया जाने वाला ज्ञान भी एक साथ हो अर्थात् परस्प्र के सहयोग से प्राप्त किया जावे। तुम सबको समान रूप से मिलकर की जाने वाली मन्त्रणा और विचार की मैं परमेश्वर मन्त्रणा देता हूँ, सलाह देता हूँ, तुम सबको समान रूप से परस्पर के लिए किये जाने वाले त्याग के द्वारा ऐश्वर्य और अभ्युदय के लिए किये जाने वाले त्याग के द्वारा ऐश्वर्य और अभ्युदय प्राप्ति के यज्ञ में नियुक्त करता हूँ। तुम सबके संकल्प समान हों, तुम्हारे हृदय एक समान हों, तुम्हारा मन एक समान हो, जिससे तुम्हारा भली भांति परस्पर मिलकर साथ रहने से होने वाला ऐश्वर्य और अभ्युदय हो सके। (ऋ. 1.191.1-4) वेद को इन उपदेशों के अनुसार धरती के मानव यदि चलने लग पड़े तो कौन सा ऐसा राष्ट्र होगा जिसके निवासीसब प्रकार की उन्नति, ऐश्वर्य और अभ्युदय तथा सब प्रकार की सुख समृद्धि के सर्वोच्च शिखर पर नहीं जा चढ़ेंगे।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

सुखी और समृद्ध घर-परिवारः- हम सभी मनुष्यों को जीवन का एक बड़ा भाग विवाहित होकर गृहस्थाश्रम में कुटुम्ब के रूप में रहकर बिताना पड़ता है। हमें गृहस्थ होकर कुटुम्ब का अपना जीवन किस प्रकार बिताना चाहिए-इस सम्बन्ध में भी वेद में बड़ा मार्मिक उपदेश दिये गये हैं। वहां कहा गया है कि भाई-भाई से द्वेष न करे, बहिन-बहिन से द्वेष न करें, घर के सब निवासी मिलकर चलने वाले बनो, कर्मो और नियमों का समान रूप से पालन करो और एक दूसरे के साथ मंगल कारक भद्रवाणी बोलो। (अथर्व 3. 30.3)। पुत्र पिता का अनुव्रत हो अर्थात् उसके अनुकूल कर्म करने वाला हो, माता के साथ एक मन वाला हो, पत्नी पति के लिए मधुरता युक्त मीठी और सुख शांति देने वाली वाणी को बोले। (अथर्व 3.30. 2) अथर्ववेद के चौदहवें काण्ड के प्रथम और द्वितीय सूक्त में तथा ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 84वें विवाह और गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में बड़े विस्तृत रूप में चर्चा की गई है और गृहस्थ जीवन को सुख का धाम बनाने के लिए बड़े महत्व के उपदेश दिये गये हैं। स्त्रियों की बहुत ऊंची तथा आदरणीय स्थिति रखी गयी हैं उन सूक्तों के सारे उपदशों और विचारों को इस लघु लेख में दे सकना संभव नहीं है। अन्य अनेक स्थलों में भी गृहस्थी जीवन के सम्बन्ध में वेद में बड़े महत्वपूर्ण उपदेश दिये गये हैं। स्थाली पुलाक न्याय से गृहस्थ जीवन के विषय में वहाँ से दो बातें ही यहाँ लिखी जा रही हैं

नारियों का स्थानः- वहाँ कहा है कि स्त्रियाँ कभी किसी प्रकार के कष्ट के कारण रोने नहीं पावें। उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाए जिससे वे निरोग रहें तथा उन्हें पहनने के लिए भांति-भांति के रत्न दिए जाएं। (अथर्व 12.2.31) गृहपत्नी को घर के सब लोगों को अपने वश में रखना चाहिए। (अथर्व.14.1.

20)। गृह पत्नी को घर के सब लोगों पर राज्य करने वाली साम्राज्ञी होना चाहिए। श्वसुर पर, देवरों पर, ननदों पर और सासों पर राज्य करनेवाली साम्राज्ञी होना चाहिए। (अथर्व. 14.1.44) गृह पत्नी को अपने घर का मंगल करने वाली और उसे बढ़ाने वाली होना चाहिए, पर वह पति को सुख देने वाली और सास को सुख देने वाली हो, (अथर्व. 16. 2.26)। पति-पत्नी को सदा हँसते-खेलते रहकर हर्ष में रहना चाहिए तथा सुन्दर घरों में रहकर सुन्दर सन्तानें उत्पन्न करनी चाहिए। (अथर्व 14.2.43) पति पत्नी को कभी एक दूसरे से वियुक्त नहीं होना चाहिए। सारी आयु एक साथ रहकर भोगनी चाहिए। (अथर्व. 14.1.22) (ऋ.10. 85.42) पति पत्नी चकवे और चकवी की तरह सदा इकट्ठे रहें और उन्हें एक साथ रहकर सारी आयु भोगनी चाहिए। (अथर्व 14.2.64) अर्थात् उनमें तलाक कभी नहीं होना चाहिए। विवाहित पति-पत्नी और घर के अन्य सब लोग यदि इन पंक्तियों में उद्‌भुत वेद के उपदेशों तथा इसी प्रकार के अन्य स्थलों में दिये उपदेशों के अनुसार अपना जीवन बिताते रहें तो सचमुच धरती के सब लोगों के गृहस्थ जीवन स्वर्गधाम बन सकते हैं।

शिक्षा से अभ्युदयः- मानव की सारी उन्नति, ऐश्वर्य, अभ्युदय और सुख समृद्धि का मूल आधार उसकी शिक्षा है, उसे शिक्षा काल में जैसी शिक्षा दी जायेगी वह वैसा ही बन जायेगा। वह अपनी शिक्षा के अनुसार ही कार्य करेगा। यदि उसकी शिक्षा अच्छी है तो वह अच्छा बन जायेगा और अपने संसार को अच्छा बना लेगा और यदि उसकी शिक्षा बुरी है तो वह बुरा बन जायेगा तथा अपने संसार को भी बुरा बना लेगा। वेद में बालकों की शिक्षा का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। अथर्ववेद के 11वें काण्ड का पांचवा सूक्त बड़े-बड़े मन्त्रों का सूक्त है। इस सूक्त को ब्रह्मचर्य-सूक्त कहा जाता है। इसमें बालकों की शिक्षा का ही वर्णन है। वेद के अन्य अनेक स्थलों में बालकों की शिक्षा के सम्बन्ध में निर्देश दिये गये हैं। वेद में विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहते हैं और विद्यार्थी काल को ब्रह्मचर्याश्रम। प्रत्येक बालक के लिए कम से कम 25 वर्ष की आयु तक और बालिका 25 वर्ष की आयु तक और बालिका के लिए कम से कम 16 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्याश्रम में रहना आवश्यक है। इस अवधि में कोई बालक विवाह नहीं कर सकेगा। वह पूर्ण संयम का जीवन व्यतीत करेगा तथा भांति-भांति के विद्या-विज्ञानों का अध्ययन करेगा। उसे भौतिक विज्ञान भी पढ़ाये जायेंगे तथा आध्यात्मिक विद्या भी पढ़ाई जायेगी। यम-नियमों और प्राणायाम आदि का अभ्यास कराके उस योग की साधना भी कराई जायेगी। वेदादि शास्त्रों का भी अध्ययन उसे कराया जायेगा। इस सारी शिक्षा का परिणाम यह होगा कि जहां उसका विविध विषयों का ज्ञान बहुत ऊँची कोटि का हो जायेगा वहाँ उसके व्यावहारिक जीवन में पवित्रता आ जायेगी और वह वेद की उन ऊँची सामाजिक शिक्षाओं को भी जीवन में ढालने वाला बन जायेगा जिनका कुछ थोड़ा सा उल्लेख ऊपर किया गया है। किसी भी राष्ट्र के बालकों को उनके विद्यार्थी काल में यदि इस प्रकार की शिक्षा दी जाने की व्यवस्था हो जाये तो उसके निवासियों का नैतिक जीवन कितना ऊँचा हो जायेगा और वह भौतिक ऐश्वर्य और अभ्युदय के किस ऊँचे शिक्षा पर पहुँच जायेगा इसकी भली-भांति कल्पना की जा सकती है।

मूलभूत आवश्यकताएँः कोई वंचित न रहेः- प्रत्येक मनुष्य की पाँच प्रधान आवश्यकताएं हैं=1-घर, 2.भोजन, 3. वस्त्र, 4. चिकित्सा, 5.शिक्षा। प्रत्येक व्यक्ति को रहने के लिए अच्छा हवादार और रोशनीदार खुला मकान मिलना चाहिए। उसे स्वास्थ्यवर्धक पौष्टिक भोजन खाने को मिलना चाहिए। उसे सर्दी-गर्मी से बचाव के लिए ऋतुओं के अनुकूल वस्त्र पहनने को मिलने चाहिएँ। रोगी हो जाने पर अच्छी से अच्छी चिकित्सा उसे मिलनी चाहिए और ऊँची से ऊँची शिक्षा मिल सकनी चाहिए। वेद में स्थान-स्थान पर मनुष्य की इन पाँच मूलभूत प्रधान आवश्यकताओं की पूर्ति के सम्बन्ध में उपदेश दिये गये हैं। वेद के अन्न सूक्तों और कृषि सूक्तों, उसके शाला (घर) सूक्तों, उसके वस्त्रों सम्बन्धी प्रकरणों, उसके आयुर्वेद विषयक, सूक्तों, उसके वस्त्रों सम्बन्धी प्रकरणो, उसके आयुर्वेद विषयक सूक्तों तथा उसके शिक्षा विषयक सूक्तों और प्रकरणों में मनुष्य मात्र की इन पांचों आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विस्तृत उपदेश दिये गये हैं। वेद के सभी प्रकरण ध्यान से पढ़ने योग्य हैं। यदि वेद के इन उपदेशों के अनुसार आचरण होने लगे तो धरती का कोई भी निवासी अपनी पाँचों आवश्यकताओं से

वंचित नहीं रह सकता।

अज्ञान अन्याय अभाव का उपाय: मनुष्य की इन आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक तीन कारण होते हैं=1.अभाव, 2. अज्ञान और 3. अन्याय। यदि राष्ट्र में इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री का अभाव है तो उसके निवासियों की ये आवश्यकतायें पूरी नहीं हो सकती। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री उत्पन्न करने का ज्ञान यदि राष्ट्रवासियों को नहीं है, अथवा उत्पन्न सामग्री का सदुपयोग करने का ज्ञान उन्हें नहीं है, तो भी उनकी ये आवश्यकतायें पूरी नहीं हो सकतीं। और यदि इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री तो राष्ट्र में पर्याप्त उत्पन्न होती है, परन्तु कुछ अन्यायी और अत्याचारी लोग इस सामग्री को जनता तक पहुँचने नहीं देते अथवा उसे लोगों से छीन लेते हैं तो भी जनता की ये आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती। अभाव, अज्ञान और अन्याय इन तीनों को राष्ट्र से दूर करने के उपाय भी वैदिक धर्म बताता है। वेद के पुरुष सूक्तों (ऋ. 10.90 यजु. 31 अथर्व 19-6) और अन्य विभिन्न स्थलों पर वेद में वर्णाश्रम व्यवस्था का उपदेश किया गया है। समाज के व्यक्तियों को उनके गुण कर्मों के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभक्त किया जाए और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, इन चार आश्रमों में विभक्त किया जाये। वर्णाश्रम व्यवस्था गुण-कर्म पर आधारित है, जन्म पर नहीं। ब्राह्मण वे लोग होंगे जो विभिन्न प्रकर के ज्ञान-विज्ञानों का आविष्कार और प्रचार करेंगे। जो सत्य की खोज और प्रचार में ही अपना जीवन समर्पित कर देंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से भांति-भाँति के अज्ञानों को दूर करने का व्रत ले लेंगे। क्षत्रिय वे लोग होंगे जो राज्य प्रबन्ध का काम सम्भाल कर जनता में किसी को किसी पर अन्याय नहीं करने देंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से अन्याय को मिटाने का व्रत ले लेंगे। वैश्य वे लोग होंगे जो पशु-पालन खेती और भांति-भांति के उद्योग धन्धों के द्वारा भांति-भांति की उपभोग सामग्री को उत्पन्न करेंगे और व्यापार द्वारा उसे सर्व-साधारण जनता तक पहुचाने का काम करेंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से उपभोग सामग्री के अभाव को दूर करने का व्रत ले लेंगे। शूद्र वे लोग होंगे जो पढ़ाने लिखाने का पूरा अवसर देने पर भी कोई भी बुद्धि से करने का काम नहीं सीख सकेंगे। ये लोग टोकरी ढोने आदि शारीरिक श्रम के काम ही कर सकेंगे। ये लोग शेष तीन वर्णो की सेवा करके उन्हें अपना काम करने का अधिक अवसर देकर उनकी सेवा द्वारा राष्ट्र की सेवा करेगें और इस सेवा को ही अपना व्रत बना लेंगे।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

राम की उत्पति सम्बन्धी बहुत सी भ्रामक, असंगत व व्यर्थ की बातें रामायण के लेखकों ने भरी हुई हैं। जिससे रामायण एक ऐतिहासिक काव्य है इसकी प्रमाणिकता पर ही प्रश्न चिह्न लग जाता है। इस सम्बन्ध में हम मुख्य-मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाल रहे हैं और निष्कर्ष के तौर पर अंत में सत्य पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगें। राम की उत्पत्ति सम्बन्धी सबसे प्रचलित धारणा यही है कि रावण के आतंक से दु:खी होकर सभी देवता एकत्रित होकर विष्णु भगवानके पास गए और हाथ जोड़कर प्रार्थना की 'हे भगवन्! आप कुछ रावण का प्रबन्ध कीजिए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो एक दिन रावण इस पृथ्वी को देवताओं से रहित कर देगा।' विष्णु भगवान ने कहा कि आप बताइए कि कैसे रावण से सुल्टा जाए। देवताओं ने आग्रह किया कि भगवन् रावण को मारना मनुष्य के वश की बात नहीं है। क्योंकि रावण अजेय है। इसे तो आप ही अवतार रूप में मनुष्य जन्म लेकर इसका विनाश कर सकते हैं। हमने महारानी कैकेयी से मिलकर सारी योजना बना ली है। महारानी कैकेयी देवताओं का भला करने और रावण को मारने के लिए अपयश का ठीकरा अपने सिर पर फुडवाने के लिए तैयार हो गई है। अब तो बस आपका ही इन्तजार है। हमारे द्वारा सारी योजना तैयार कर ली गई है। अब देवताओं की बात विष्णु भगवान ना माने, ऐसा हो नहीं सकता। इसीलिए विष्णु भगवान ने माता कौशल्या के गर्भ में आना स्वीकार कर लिया और जन्म लेनेपर इसी बालक का नाम रामचन्द्र रखा गया। जो रामायण का मुख्य पात्र है। जिन रामायणों के लेखकों ने राम को परमात्मा का अवतार मानकर रचना की है वे प्राय: इसी अवधारणा का शिकार हुए हैं। उन्होंने अपनी बुद्धि से विचार किए बिना ही रामायण या रामचरित मानस को लिख डाला, जिससे सारा गुड़ गोबर हो गया। दूसरा जो राम के जन्म सम्बन्धी पुराणों के लेखकों और कथा वाचकों के द्वारा सुनते व पढ़ते हैं। वह इस प्रकार है:- श्रृंगि ऋषि द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ उपरान्त तीनों रानियों को ऋषि ने खाने के लिए एक-एक लड्डू दिया। सुमित्रा के हाथ से एक पक्षी झपट्टा मारकर लड्डू ले गया। जिससे सुमित्रा विलाप करने लगी। उसका विलाप सुन और उसका कारण जानने उपरान्त महारानी कौशल्या व महारानी कैकेयी ने अपने-अपने लड्डू में से आधा-आधा करके सुमित्रा को दे दिया। जिसके

कारण उसको जुडवां दो पुत्र उत्पन्न हुए जिनका नाम लक्ष्मण व शत्रुघ्न रखा गया। कौशल्या व कैकेयी ने आधा-आधा लड्डू ही खाया इसीलिए उनसे एक-एक पुत्र ही उत्पन्न हुआ, कौशल्या से राम व कैकेयी से भरत। कई लड्डूओं की जगह फल भी बता देते हैं। इससे भी लगता है जब वो पक्षी जो सुमित्रा के हाथ से लड्डू झपट करके ले गया, उसकी चोंच से वह लड्डू फूट गया और जब वह पृथ्वीपर गिरने लगा तो फिर बन्द कर लड्डू को ईश्वरीय प्रसाद समझ कर खा लिया, जिसकी कोख से हनुमान ने जन्म लिया। अब आप ही विचार कीजिए कि ये बातें स्वप्न समान होने के कारण कितनी सत्य हैं? और एक हम हैं कि इन बातों को बड़े श्रद्धा भाव से सुनते व पढ़ते हैं और सत्य को जानने के लिए कोई प्रयत्न नहीं करते। या फिर दूसरे वे लोग हैं जो महात्मा बुद्ध की तरह विचारशक्ति रखते हैं कि अगर नर बलि और पशु बलि वेदों में वर्णित हैं तो मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता। काश! महात्मा बुद्ध यह धारणा बनाकर तपस्या व अध्ययन करते कि वेदों में ऐसा लिखा हो ही नहीं सकता और दयानन्द की तरह ताल ठोक कर कहते कि दिखाओं वेदों में मूर्ति पूजा व बलि प्रथा कहाँ पर है। कुछ व्यक्ति जो रामायण व महाभारत जैसे ग्रन्थों में प्रक्षेप होने के कारण अविश्वास प्रकट करते हैं तथा इनका ऐतिहासिक ग्रन्थ होने पर भी संदेह प्रकट करते हैं, उन्हें अध्ययन द्वारा सत्य व असत्य के खोजने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। आईए हम वाल्मिकी रामायण के अनुसार राम की उत्पत्ति विषयक सरल ढंग

से इसका वर्णन करते हैं। जो इस प्रकार है: सरयु नदी के तट पर धन-धान्य से पूर्ण एक बड़ा प्रफुल्लित कौशल नाम का महान देश स्थापित था। इस देश में मानवेन्द्र मनु की बसाई हुई लोक प्रसिद्ध अयोध्या नाम नगरी है, जो इस प्रकार शोभायमान थी:-

आयता दश च द्वे च योजनांति महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा सुविभक्तमहापथा॥

बा.का. 5/4

(वह महापुरी 12 योजन लगभग 48 कोस लम्बी, 3 योजन लगभग 12 कोस चौड़ी विस्तृत मार्गो वाली थी) अयोध्या की भव्यता, स्मृद्धि तथा शूरवीर योद्धाओं की तुलना रामायण में इन्द्र की अमरावती के समान की गई है। इसी अयोध्या नगरी में सत्य नामा, महा पराक्रमी, महातेजस्वी और शत्रुओं का नाश करने वाला राजा दशरथ इन्द्र के समान शासन करता था। उस राजा के 8 मन्त्री व 2 ऋत्विज निरन्तर राज व्यवस्था देखते थे। आठ मन्त्रियों में धृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्द्धन, अकोप, धर्मपाल और अर्थवित तथा आंठवा मन्त्री सुमन्त्र था। राज पुरोहित महाश्रेष्ठ वशिष्ठ व ऋषि वामदेव थे। इसके अतिरिक्त सुयज्ञ, जावाली, कश्यप, गौत्तम, दीर्घायु, मार्कडेय व कात्यायन भी राज्यसभा में सम्मिलित थे। ये सभी विद्या विनीत, लज्जावान, चतुर, जितेन्द्रिय, कभी झूठ ना बोलने वाले, सहनशील, तेजस्वी, यशस्वी व मधुर भाषी थे। राजा दशरथ को काफी समय से सन्तान सुख प्राप्त नहीं हो रहा था। एक दिन ऐसे ही अवसर पर सभा में श्रृंगी ऋषि भी सभा में उपस्थित थे। राजा दशरथ ने चिन्तित हो, श्रृंगी ऋषि से कहा ''हे सुव्रत आपको हमारी वंश वृद्धि का उपाय करना चाहिए।'' राजा के वचन सुनकर श्रृंगी ऋषि ने कहा कि ''हे राजन! आपको अवश्य ही पुत्र प्राप्त होंगे, जिसके लिए आपने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाना होगा। हे राजा पुत्रोत्पत्ति के लिए अथर्व वेदमें विधान की हुई विधि अनुसार मैं पुत्रेष्टि यज्ञ करवाऊँगा, जिस विधि को मैं भली प्रकार जानता हूँ।'' बा.का. 8/3,4,5।

यज्ञ के समाप्त होने पर राजा दशरथ को संतान प्राप्त हुई।

ततो यज्ञ समाप्ते तु ऋतुनां षटसमत्ययुः।
ततक्ष द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके हिथौ॥

बा.का. 8/8

यज्ञोपरान्त 12वें महीने में चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को माता कौशल्या के गर्भ से राम का जन्म हुआ। इसी प्रकार माता कैकेयी से भरत व माता सुमित्रा से लक्ष्मण व शत्रुघ्न उत्पन्न हुए। परस्पर भाईयों का बहुत स्नेह था। एक दूसरे के बिना भोजन भी नहीं करते थे। महर्षि वशिष्ठ ने चारों भाईयों के लिए उत्तम शिक्षा का प्रबन्ध किया। जहाँ वे सूर्य के समान चहुँमुखी वृद्धि व उन्नति।

टिप्पणी:- रावण से घबराकर देवताओं का विष्णु भगवान के पास जाना तथा विचित्र पुत्रेष्टि यज्ञ द्वारा राम की उत्पत्ति पर विश्वास करना ऐसी ही है जैसे बिन बादल बरसात, यह बातें शारीरिक विज्ञान के भी विरूद्ध हैं। इसी प्रकार की मनघडंत कहानियों से रामायण की वास्तविकता पर प्रश्न चिह्न लगता है। सत्य घटना इस प्रकार है कि जब राजा दशरथ के तीन विवाह होने के उपरान्त भी सन्तान सुख नहीं मिला तो उसने अपनी इस चिन्ता को मन्त्रिपरिषद् में महर्षि वशिष्ठ आदि के सम्मुख प्रकट किया। उस समय ऋषि-महर्षियों का जमाना था। कोई आयुर्वेद आदि विषयों के विशेषज्ञ होते थे। ठीक इसी प्रकार श्रृंगी ऋषि पुत्रेष्टि आदि यज्ञों के विशेषज्ञ थे। श्रृंगी ऋषि को बुलवाया गया और उनसे महाराज दशरथ ने अपनी चिन्ता को प्रकट की। ऋषि ने सहर्ष पुत्रेष्टि यज्ञ करना स्वीकार कर लिया ओर महाराज दशरथ को आश्वासन दिलाया कि उचित समयय पर आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। पुत्रेष्टि यज्ञ हुआ और तीनों रानियों से चार पुत्र

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

उत्पन्न हुये। अब हम थोड़ा सा वर्णन पुत्रेष्टि यज्ञ के विषय में स्पष्ट करते हैं। देखिए प्रत्येक गृहस्थ चाहे वह राजा हो या रंक उसकी यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि उसे सन्तान सुख प्राप्त हो। विवाह करने का एक मात्र उद्देश्य भी यही होता है ना कि काम इच्छा की पूर्ति। सन्तान उत्पन्न ना होने के कई कारण हो सकते हैं जिनमें प्रारब्ध भी एक है। शारीरिक कारणों को तो चिकित्सा द्वारा तथा प्रारब्ध आदि कारणों को बड़े-बड़े यज्ञों द्वारा दूर किया जा सकता है। उस समय इस विषय के विशेषज्ञ श्रृंगी ऋषि को माना जाता था। यह हम इसीलिए लिख रहे हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और इस प्रकार के पुत्रेष्टि यज्ञ का अथर्ववेद के कई प्रकरणों में इसका वर्णन आया है। हमने भी एक वेद मन्त्र पढ़ा है जो कि इस प्रकार है:-

शमीमश्वत्थ ओ३इस्तत्रा पुंसवन कृतम।
तद् वै पुत्रास्य वेदनं तत्रा स्त्रीष्वाभरामसि॥

अथर्ववेद 6.11.1

(जिसमें लिखा शमी वृक्ष में पीपल का पेड़ उगा होने पर उससे पुत्र उत्पन्न होने अर्थात् सन्तान उत्पत्ति की एक विशेष सफल औषधि का निर्माण किया जा सकता है।) ठीक इसी प्रकार सुयज्ञ, वामदेव, जावालि, कश्यप, पुरोहित वशिष्ठ आदि अन्य ब्राह्मणों की सम्मति से सरयू के तट पर उत्तर की ओर यज्ञमण्डप बनाया गया। ब्रह्मा के स्थान को स्वयं श्रृंगी ऋषि ने सुशोभित किया। राजा दशरथ और तीनों रानियों को चिरकाल तक व्रत करा वेदानुसार सब विधियों को पूरा करके यज्ञ को सम्पन्न किया। यज्ञ शेष को राजा तथा तीनों रानियों ने सेवन किया तथा ऋषि श्रृंगी सहित उपस्थित सभी ऋषि मुनियों व ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिये। राजा ने भी सभी विद्वानों व ब्राह्मणों का उचित सम्मान किया और सभी को गौ तथा सुवर्णादि विविध प्रकार से दक्षिणा देकर प्रसन्न किया। यहाँ पर रामायण में अवश्मेद्य यज्ञ का भी वर्णन आया है। जिसमें यज्ञ के अन्दर बलि का होना भी लिखा हुआ मिलता है। जिससे हम पूर्णतया असहमत हैं और इसे प्रक्षिप्त मानते हैं। बलि देने से यज्ञ आदि शुभ कर्म भ्रष्ट होते हैं ना की सफल। नर बलि और पशु बलि का यज्ञों में विधान वाममार्गियों द्वारा मिलाया हुआ है। वैसे तो सैकड़ों रामायणें लिखी हुई हैं लेकिन रामायण के पश्चात् राम चरितमानस को ज्यादा महत्व दिया जाता है। सो इसमें वर्णित राम की उत्पत्ति सम्बन्धी जानकारी भी दी जा रही है।

एक बार भूपति मन माही,
मैं गलानि मोई सुत नाही।
गुरु गृह गयउ तुरत महिपाला,
चरन लागि करि बिनय बिसाला।
निज दु:ख सुख सब गुरहि सुनायउ,
कहि वशिष्ट बहुबिचि समुझायउ।
धरहु धीर होइहहि सुत चारी,
त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी।
श्रृंगी रिषिह बशिष्ठ बोलावा,
पुत्र काम सुभ यज्ञ करावा।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे
प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे।
जो बशिष्ट कछु हृदय बिचारा,
सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा।
यह हबि बांटि देहु नृप जाई,
जया योग जेहि भाग बनाई।

(अर्थात् एक बार राजा दशरथ बहुत भयभीत व चिन्तित हुये अपने राज गुरु वशिष्ट के पास गये और अपनी चिन्ता का कारण सन्तान पुत्रोकामना पूर्ण होगी। श्रृंगी ऋषि को बुलवाया उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ किया और यज्ञ, शेष तीनों रानियों को खाने के लिए दिया परिणाम स्वरूप राजा को सन्तान सुख प्राप्त हुआ)। इस विषय में रामायण व रामचरितमानस में लगभग समानता है। बस यज्ञ शेष के वितरण व खाने में थोड़ी सी असंगति प्रतीत होती है। इसीलिए राम की उत्पत्ति सम्बन्धी सारी की सारी प्रक्रिया वैज्ञानिक व शारीरिक प्रकृति की पाई जाती है। जिसमें चमत्कार जैसी कोई बात नहीं। अब इससे आगे रावण, सीता व हनुमान की उत्पत्ति सम्बन्धी जानकारी प्रदान की जा रही है।

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

महर्षि दयानन्द का नवदम्पत्तियों व गृहस्थियों को वेदसम्मत कर्तव्योपदेश'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

महर्षि दयानन्द महाभारतकाल के बाद संसार में वेदों के सर्वाधिक ज्ञानसम्पन्न विद्वान व ऋषि हुए हैं। उन्होंने वेदों वा वेदों की संहिताओं की खोज कर उनका संरक्षण करने के साथ वेदों पर भाष्य भी किया। मनुष्य जाति मुख्यत: वेदप्रेमियों का यह दुर्भाग्य था कि कुछ पतित लोगों ने उनको विषपान करा कर अकाल मृत्यु का ग्रास बना दिया जिससे उनका वेदभाष्य पूरा न हो सका। उन्होंने जितना वेदभाष्य किया है, वह उपलब्ध वैदिक साहित्य में महत्वपूर्ण एवं वैदिक विद्वानों द्वारा सर्वत्र आदरणीय एवं सम्माननीय है। स्वामीजी ने वेदभाष्य से इतर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिसमें उन्होंने वेद अर्थात् ईश्वर की आज्ञानुसार सभी स्त्री-पुरुषों के कर्तव्यों पर प्रकाश डाला है। संस्कारविधि ग्रन्थ में उन्होंने मनुष्यों के 16 संस्कारों पर प्रकाश डालने के साथ संस्कारों में प्रासंगिक वेदमन्त्रों का विनियोग कर संस्कार व उससे सम्बन्धित कर्तव्यों की विस्तृत व पूर्ण विधि पर भी प्रकाश डाला है। यह ज्ञातव्य है कि महर्षि दयाननन्द ने समावर्तन, विवाह एवं गृहस्थाश्रम संस्कारों में अनेक वेदमन्त्रों को प्रस्तुत कर उनके अर्थों पर प्रकाश डाला है। यह सभी मन्त्र व उनके अर्थ उनके नवदम्पतियों को वेदोपदेश ही हैं। आईये, गृहस्थ आश्रम पर उनका सम्पादनयुक्त एक उपदेश सुनते हैं।

(हे स्त्री-पुरुषों) 'गृहाश्रम-संस्कार' उसे कहते हैं कि जो ऐहिक और पारलौकिक सुख-प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना, नियतकाल में यथाविधि ईश्वर-उपासना, गृहस्त्य करना, सत्य धर्म में ही अपना तन-मन-धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानों की उत्पति करना। इसके बाद वेद मन्त्रों को प्रस्तुत कर उन्होंने उनके अर्थ किये हैं जिसमें वह कहते हैं कि सुकुमार, शुभगुणयुक्त, वधू की कामना करनेवाला पति तथा पति की कामना करनेवाली वधू और दोनों श्रेष्ठ, तुल्य गुण, कर्म, स्वभाववाले होवें। ऐसी जो सूर्य की किरणवत् सौन्दर्य गुणयुक्त, पति के लिए मन से गुण-कीर्तन करनेवाली वधू है, उसको पुरुष और इसी प्रकार के पुरुष को स्त्री सकल जगत् का उत्पादक परमात्मा देता है अर्थात् बड़े भाग्य से दोनों स्त्री-पुरुषों का जो कि तुल्य गुण, कर्म, स्वभाव वाले हों, जोड़ा मिलता है।

हे स्त्री और पुरुषों ! मैं परमेश्वर आज्ञा देता हूं कि तुम्हारे लिए विवाह में जो प्रतिज्ञा हो चुकी है, जिसे तुम दोनों ने स्वीकार किया है, इसी में तत्पर रहो, इस प्रतिज्ञा से वियुक्त मत होओ। ऋतुगामी होके ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सम्पूर्ण आयु जो सौ वर्षों से कम नहीं है, उसे प्राप्त होओ और वैदिक धर्म रीति से पुत्रों और नातियों के साथ क्रीड़ा करते हुए उत्तम गृहवाले आनन्दित होकर गृहाश्रम में प्रीतिपूर्वक निवास करो। वधू को सम्बोधित कर वह कहते है कि हे वरानने ! तू अच्छे मंगलाचरण करने तथा दोष और शोकादि से पृथक् रहनेवाली, गृह-कार्यों में चतुर और तत्पर रहकर उत्तम सुखयुक्त होके पति, श्वशुर और सासु (देवर और ननद सहित) के लिए सुखकर्त्री और स्वयं प्रसन्न हुई इन घरों में सुखपूर्वक प्रवेश कर। हे वधू ! तू श्वशुरादि के लिए सुखदाता, पति के लिए सुखदाता, गृहस्थ सम्बन्धियों (देवर व ननद आदि) के लिए सुखदायक हो और इस सब प्रजा के अर्थ सुखप्रद और इनके पोषण के अर्थ तत्पर हो। महर्षि दयानन्द कहते हैं कि जो दुष्ट हृदयवाली अर्थात् दुष्टात्मा जवान स्त्रियां (यदि कोई हो) और जो इस स्थान में बूढ़ी-वृ) स्त्रियां हों, वे भी इस वधू को शीघ्र तेज अर्थात् शुभकामनायें व आशीर्वाद देवें। इसके पश्चात् अपने-अपने घर को चली जायें और फिर इसके पास कभी न आवें। हे वरानने ! तू प्रसन्नचित होकर पलंग पर शयन कर और गृहाश्रम में स्थिर रहकर इस पति के लिए प्रजा को उत्पन्न कर। सुन्दर ज्ञानी उत्तम शिक्षा को प्राप्त सूर्य की कान्ति के समान तू उषा काल से पहली ज्योति के तुल्य प्रत्यक्ष सब कामों में जागती रह (सजग व सावधान रह)।

हे सौभाग्यप्रदे नारी! जैसे इस गृहाश्रम में प्रथम विद्वान लोग उत्तम स्त्रियों को प्राप्त होते हैं, वैसे तू विविध प्रकार से सुन्दररूप को धारण करनेहारी, सत्कार

को प्राप्त होके सूर्य की कान्ति के समान अपने स्वामी के साथ मिलके प्रजा को प्राप्त होनेवाली अच्छे प्रकार हो। हे स्त्री-पुरुषों ! तुम बालकों के जनक गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए सन्तानों को अच्छे प्रकार उत्पन्न करो। हे पुरुष वा पति ! इस अपनी स्त्री को सन्तानों से बढ़ा और दोनों परस्पर मिलकर इस गृहाश्रम में प्रजा को उत्पन्न करो, पालन-पोषण करो और पुरुषार्थ से धन को प्राप्त होओ। हे वृद्धि कारक पुरुष! जिसमें मनुष्य लोग बीज को बोते हैं, उस अतिशय कल्याण करनेवाली स्त्री को सन्तानोत्पत्ति के लिए प्रेम से प्रेरणा कर। हे स्त्री और पुरुष ! जैसे सूर्य सुन्दर प्रकाशयुक्त प्रभातवेला को प्राप्त होता है, वैसे सुख से घर के मध्य में सन्तानोत्पत्ति आदि की क्रिया को अच्छे प्रकार जाननेवाले, सदा हास्य और आनन्दयुक्त, बड़े प्रेम से अत्यन्त प्रसन्न हुए, उत्तम चालचलन से धर्मयुक्त व्यवहार में अच्छे प्रकार चलनेवाले, उत्तम पुत्रवाले, श्रेष्ठ गृहादि सामग्रीयुक्त उत्तम प्रकार की संतानों को धारण करते हुए गृहाश्रम के व्यवहारों को पूरा करो।

प्रवचन को जारी रखते हुए महर्षि दयानन्द आगे कहते हैं कि हे परमैश्वर्ययुक्त विद्वान् राजन् ! आप इस संसार में इन स्त्री-पुरुषों को समय पर विवाह करने की आज्ञा और ऐसी व्यवस्था दीजिए कि जिससे कोई स्त्री-पुरुष वैदिक रीति के विपरीत विवाह योग्य आयु से पूर्व वा अन्यथा विवाह न कर सकें। वैसे सबको प्रसिद्धि से प्रेरणा कीजिए जिससे ब्रह्मचर्यपूर्वक शिक्षा को पाकर जाया और पति चकवा-चकवी के समान एक-दूसरे से प्रेमबद्ध रहें और गर्भाधान-संस्कारोक्त विधि से उत्पन्न हुई प्रजा से ये दोनों सुखयुक्त होके सम्पूर्ण-सौ वर्षपर्यन्त आयु को प्राप्त होवें। हे मनुष्यों! जैसे विद्यादि उत्तम गुणों का (उपदेश व प्रवचन द्वारा) दान करने वाले उत्तम स्त्री-पुरुष पुत्रोत्पत्ति करते और पुत्र की कामना करते हैं, वैसे हमारे भी सन्तान उत्तम होवें तथा बल, प्राण का नाश न करनेवाले होकर बड़े परोपकार के अर्थ विज्ञान और अन्न आदि के दान के लिए कटिबद्ध सदा रहें, जिससे हमारे सन्तान भी उत्तम होवें। पति अपनी पत्नी को सम्बोधित कर शिक्षा देता है कि हे पत्नि! तू शतवर्षपर्यन्त वा दीर्घकाल तक जीने के लिए उत्तम बुद्धियुक्त, सद्ज्ञानयुक्त होकर मेरे घरों को प्राप्त हो और मुझ घर के स्वामी की तुझ स्त्री, जैसे तेरा दीर्घकाल-पर्यन्त जीवन होवे, वैसे प्रकृष्ट ज्ञान और उत्तम व्यवहार को यथावत् जान। दम्पति की इस आशा को सब जगत् की उत्पत्ति और सम्पूर्ण ऐश्वर्य को देनेवाला परमात्मा अपनी कृपा से सदा सिद्ध करे। जिससे वह दोनों सदा उन्नतिशील होकर आनन्द में रहें। ईश्वर गृहस्थों को उपदेश कर कहते है कि हे गृहस्थो! मैं ईश्वर तुमको जैसी आज्ञा देता हूं, वैसा ही आचरण व व्यवहार करो, जिससे तुम्हें अक्षय सुख हो, अर्थात् जैसे तुम अपने लिए सुख की इच्छा करते और दु:ख नहीं चाहते हो, वैसे ही तुम दोनों माता-पिता, सन्तान, स्त्री-पुरुष, भृत्य, मित्र, पड़ोसी और अन्य सबसे समान हृदय रहो। मन से सम्यक् प्रसन्नता और वैर-विरोधादिरहित व्यवहार को तुम्हारे लिए स्थिर करता हूं। तुम (अघ्न्या) हनन न करने योग्य गाय जैसे अपने सद्योजात उत्पन्न हुए बछड़े पर वात्सल्यभाव से वर्तती है, वैसे एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक कामना (सद्भावना) से वर्ता करो।

परमात्मा के गृहस्थियों को उपदेश को जारी रखते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं कि हे गृहस्थों! जैसे तुम्हारा पुत्र माता के साथ प्रीतियुक्त मनवाला, अनुकूल आचारणयुक्त, और पिता के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का प्रेमवाला होवे, वैसे तुम भी अपने पुत्रों के साथ सदा वर्ता करो। पुत्रों के समान व्यवहार ही पुत्रियों के प्रति भी करो। जैसे स्त्री पति की प्रसन्नता के लिए माधुर्यगुणयुक्त वाणी को कहे, वैसे पति भी शान्त होकर अपनी पत्नी से सदा मधुर भाषण किया करे। हे गृहस्थो! तुम में भाई भाई के साथ द्वेष कभी न करे। और बहिन बहिन से द्वेष कभी न करे तथा बहिन-भाई भी परस्पर द्वेष मत करो, किन्तु सम्यक् प्रेमादि गुणों से युक्त समान गुण, कर्म, स्वभाववाले होकर मंगलकारक रीति से एक-दूसरे के साथ सुखदायक वाणी को बोला करो। हे गृहस्थो! जिस प्रकार के व्यवहार से विद्वान लोग परस्पर पृथक् भाववाले नहीं होते और परस्पर में द्वेष कभी नहीं करते, वही कर्म, मैं ईश्वर, तुम्हारे लिए निश्चित करता हूं। पुरुषों को अच्छे प्रकार चिताता हूं कि तुम लोग परस्पर प्रीति से वर्तकर बड़े धनैश्वर्य को प्राप्त होओ। हे गृहस्थादि मनुष्यो! तुम उत्तम विद्यादिगुणयुक्त, विद्वान, सद्ज्ञानी, धुरन्धर होकर विचरण करते हुए और परस्पर मिलकर धन-धान्य व राज्यसमृद्धि को प्राप्त होते हुए विरोधी वा पृथक-पृथक् भाव परस्पर मत करो। एक दूसरे के लिए सत्य, मधुर भाषण करते हुए

एक-दूसरे को प्राप्त होओ। इसीलिए समान लाभ व हानि में एक-दूसरे के सहायक तथा एक-मत (समान-मत) वाले तुमको करता हूं अर्थात् मैं ईश्वर तुमको जो आज्ञा देता हूं, इसको आलस्य छोड़कर किया करो (जिससे तुम सुखी, आनन्दित व सम्पन्न हों)।

स्वामी दयानन्द जी का गृहस्थियों को यह उपदेश जारी है। यदि हम इसे पूरा प्रस्तुत करें तो इस सामग्री की दुगुनी सामग्री अभी शेष है। अत: हम सभी पाठकों वा गृहस्थियों से निवेदन करते हैं कि वह संस्कारविधि का गृहस्थाश्रम प्रकरण पूरा पढ़े और महीने में एक या दो बार इसे दोहरा लिया करें जिससे इसके पाठ व आचरण से परिवार में प्रेम, सुख, शान्ति व समृद्धि विद्यमान रहे। हम आशा करते हैं कि पाठक महर्षि दयानन्द के इन उपदेश को पसन्द करेंगे।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,
मो.09412985121

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
69. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
70. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
71. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड

काली खांसी

- प्रस्तुति विक्रम देव शास्त्री

उत्पति एवं लक्षण:- काली खांसी को कुक्कर खांसी भी कहा जाता है। काली खांसी को लेकर जनसाधारण में अनेक अंधविश्वास फैले हुए हैं। काली खांसी के रोगी को बार-बार खांसी का दौरा पड़ता है और उल्टी होने के बाद ही खांसी का प्रकोप कुछ कम होता है। जल्दी ही फिर तीव्र गति से खांसी प्रारंभ हो जातीहै और फिर रोगी को फिर से उल्टी होती है। रोगी रात को चैन की नींद नहीं सो पाता। बार-बार उल्टी होने से रोगी कमजोर होता जाता है। रोगी की ऐसी अवस्था को देखकर कुछ लोग इसे दैवी का प्रकोप मानते हैं।

इसी अंधविश्वास के कारण लोग इस रोग कि चिकित्सा कराने के बजाय ओझा व तांत्रिकों के चुंगल में जा फंसते हैं। ओझा व तांत्रिकों के चक्कर में पड़े रोगी की हालत दिन पर दिन बिगड़ती जाती है और अधिक हालत खराब होने पर तिमारदार रोगी को लेकर किसी डॉक्टर या अस्पताल की ओर दौड़ते हैं।

यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना बेहद जरूरी है कि काली खांसी कोई दैवी प्रकोप नहीं बल्कि दूसरे रोगों की तरह एक कष्टदायक रोग है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में काली खांसी को वातज कास, माकण्ड खांसी, डांग्या खोकला और अंग्रेजी में 'हूपिंग कफ' कहा जाता है।

काली खांसी 7-8 महीनेके शिशु से लेकर 5-6 वर्ष के बच्चों को अधिक होती है। स्कूल में पढ़ने वाले 10-12 वर्षीय बच्चे भी कुक्कर खांसी के शिकर हो सकते हैं। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को कुक्कर खांसी अधिक होती है। गरम प्रदेशों की अपेक्षा ठंडे पर्वतीय स्थलों पर रहने वाले बच्चे इस रोग से अधिक पीड़ित होते हैं।

काली खांसी किसी भी ऋतु परिवर्तन के समय संक्रामक रूप से उत्पन्न हो सकती है लेकिन बसंतऋतु में मार्च और अप्रैल के दिनों में इसका अधिक प्रकोप होता है। काली खांसी की उत्पत्ति किसी रोगी बच्चे के सम्पर्क में आने से अधिक होती है। इसी कारण इसे संक्रामक रोग कहा गया है। महानगरों में वायु प्रदूषण के कारण काली खांसी का प्रकोप अधिक होता है। दूषित जल व दूषित खाद्य-पदार्थो के सेवन के कारण छोटे बच्चे काली खांसी से अधिक पीड़ित होते हैं।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति एलोपैथी के अनुसार काली खांसी की उत्पत्ति बेसिलस पर्ट्युटिस नामक जीवाणुओं के संक्रमण के कारण होती है। किसी रोगी बच्चे से बातचीत करने से जीवाणुओं का संक्रमण दूसरे स्वस्थ बच्चे पर होता है। इस रोग के जीवाणु रोगी बच्चे के मुंह और नाक में छिपे रहते हैं। रोगी बच्चे के खांसने और छींकने से जीवाणु वायु में फैलकर स्वस्थ बच्चे तक पहुंचकर उन्हें भी अपना शिकार बना देते हैं। वायु में फैले यही जीवाणु खाने-पीने की चीजों तक पहुंचकर उन्हें भी दूषित बना देते हैं। ऐसे दूषित भोजन के सेवन से घर के दूसरे बच्चे भी काली खांसी के शिकार होते हैं।

स्कूल में जब किसी कक्षा में एक बच्चे को काली खांसी होती है तो उससे बात करने वाले बच्चे भी काली खांसी के शिकार बन जाते हैं।

काली खांसी के शिकार कुछ बच्चे पैन्सिल व पैन आदि मुंह में डालते हैं। ऐसी चीजों का जब दूसरे बच्चे स्पर्श करते हैं तो वे भी जीवाणुओं के संक्रमण के शिकार हो जाते हैं।

कारण:- काली खांसी के चलते जब कोई बच्चा शीतल खाद्य-पदार्थो व पेयों का सेवन करता हैं तो काली खांसी का प्रकोप अधिक होने लगता है। रोगी बच्चे शीतल वातावरण में नंगे सिर व कम वस्त्रों में घूमते हैं तो शीतल वायु के प्रकोप से रोग अधिक उग्र रूप धारण कर लेता है। ऐसी स्थिति में दूसरे रोग जैसे-ब्रांकों, न्यूमोनिया, वातश्लैष्मिक ज्वर (फ्लू), ब्रोंकाइटिस के रोग की उत्पत्ति हो सकती है।

कुछ बच्चे अतिसार से भी पीड़ित होते है। निरंतर खांसी के प्रकोप से कुछ रोगी बच्चों का मूत्र निकल जाता है। कुछ बच्चे गुदभ्रंश (कांच निकलने) की विकृति से पीड़ित होते हैं।

चिकित्सा:- आयुर्वेदिक चिकित्सा में काली

खांसी की अनेक गुणकारी औषधियां उपलब्ध हैं। काली खांसी की उत्पत्ति के कारण को जान लेने के बाद इन औषधियों का सेवन कराने से अति शीघ्र लाभ होता है।

- लौंग को तवे पर भूनकर, कूटकर बारीक चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में मधु मिलाकर बच्चे को दिन में दो-तीन बार चटाने से खांसी का प्रकोप कम हो जाता है।
- भुनी लौंग को मुंह में रखकर चूसने से खांसी का प्रकोप शांत रहता है।
- बड़े पात्र में जल उबालकर उसमें यूकेलिप्टस आयल की कुछ बूंदें डालकर भाप में श्वास लेने से काली खांसी के जीवाणु नष्ट होते हैं।
- फिटकरी की भस्म 60 मि.ग्रा. से 120 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में दो तीन बार शहद के साथ मिलाकर, चटाने से काली खांसी नष्ट होती है।
- अदरक के रस में शहद मिलाकर चटाने से भी लाभ होता है।
- रोगी बच्चे को लहसन की कलियों की माला बनाकर पहनाने से भी काली खांसी में बहुत लाभ होता है।
- अडूसे का रस निकालकर हल्का सा गर्म करके बच्चे को पिलाने से काली खांसी कम होती है।
- अदरक के 5-6 मिलीलीटर रस में इलायची का थोड़ा सा चूर्ण तथा मधु मिलाकर रोगी बच्चे को चटाने से खांसी में बहुत लाभ होता है।
- केले के पत्तों को छाया में सुखाकर, मिट्टी के बर्तन में रखकर मुंह बन्द करके, तेज आँच पर देर तक गर्म करके, केले के पत्ते की भस्म बना लें। इस भस्म को 120 से 180 मि.ग्रा. की मात्रा में दो-तीन बार मधु के साथ बच्चे को चटाने से काली, खांसी का प्रकोप नष्ट होता है।
- छोटी इलायची, छोटी पीपल, दालचीनी, वंशलोचन और मिश्री से बना सितोपलादि चूर्ण 2-2 ग्राम की मात्रा में, मधु मिलाकर दिन में कई बार चटाने से बहुत लाभ होता है।
- काली मिर्च और सोंठ को कूट-पीसकर खूब बारीक चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को 2 ग्राम की मात्रा में लेकर शहद मिलाकर बच्चे को दो-तीन बार चटाने से काली खांसी नष्ट होती है।
- काली बकरी का दूध उबालकर पिलाने से भी काली खांसी का प्रकोप कम होता है।
- काली मिर्च 2 ग्राम और मिश्री 20 ग्राम की मात्रा में लेकर जल में उबालकर, छानकर हल्का गर्म पिलाने से बहुत लाभ होता है।
- छोटी कटेरी को जल में उबालकर, क्वाथ बनाकर पिलाने से भी काली खांसी में बहुत लाभ होता है।
- मोर के पंखों के ऊपरी भाग को मिट्टी के पात्र में रखकर तेज आंच पर गर्म करके भस्म बनाएं। इस भस्म में भुना हुआ सुहागा मिलाकर, शहद के साथ चटाने से काली खांसी का प्रकोप नष्ट होता है।
- काली खांसी से पीड़ित बच्चे को भाप देने से बहुत लाभ होता है। किसी बर्तन में पानी उबालकर, उसमें बच्चे से श्वास लेने को कहें। भाप से बच्चे के मुंह व नाक में छिपे जीवाणु नष्ट होते हैं। काली खांसी का प्रकोप दूर होता है।
- छोटी पीपल और तेजपात की छाल 10-10 ग्राम की मात्रा में लेकर कूटकर चूर्ण बना लें। 2 ग्राम चूर्ण को शहद में मिलाकर, दिन में दो तीन बार चटाने से काली खांसी नष्ट होती है।
- रोगी बच्चे को बिस्तर पर सुलाने से पहले छाती और कमर पर सैन्धवादि तेल या चंदनादि तेल हल्का गरम करके मालिश करने से रात्रि को खांसी का प्रकोप शांत होता है।

सावधानी एवं खान-पान:- काली खांसी से पीड़ित रोगी को अपने खान-खान में सावधानियां बरतनी आवश्यक हैं। रोगी को हल्का गरम पानी पीने के लिए दें। ठंडी हवा में बाहर न निकलने दें। शीतऋतु में नंगे पांव व नंगे सिर बाहर न निकलें।

इस रोग से पीड़ित बच्चे को अधिक घी-तेल में तले खाद्य पदार्थ खाने को न दें। उसे शीतल फल व सब्जियों का सेवन न कराएँ। चावलों का परहेज आवश्यक है। रोगी को चाय, दूध, काफी का सेवन लाभ पहुंचाता है।

पेट में गैसः कारण व उपचार

पेट गैस को अधोवायु कहते हैं। इसे पेट में रोकने से कई बीमारियाँ हो सकती हैं, जैसे-एसिडिटी, कब्ज, पेटदर्द, सिरदर्द, जी मिचलाना, बेचैनी आदि। लम्बे समय तक अधोवायु को रोके रखने से बवासीर भी हो सकती है। आयुर्वेद कहता है कि आगे जाकर इससे नपुसकता और महिलाओं में यौन रोग होने की भी आशंका हो सकती है।

गैस बनने के लक्षण

पेट में दर्द, जलन, पेट से गैस पास होना, डकारें आना, छाती में जलन, अफारा आदि। इसके अलावा जी मिचलाना, खाना खाने के बाद पेट ज्यादा भारी लगना और खाना हजम न होना, भूख कम लगना, पेट भारी-भारी रहना और पेट साफ न होने जैसा महसूस होना।

क्यों बनती है गैस

खानपान से- शराब पीने से, मिर्च-मसाला, तली-भुनी चीजें ज्यादा खाने से। बींस, राजमा, छोले, लोबिया, मोठ, उड़द की दाल, फास्ट फूड, ब्रेड और किसी-किसी को दूध या भूख से ज्यादा खाने से। खाने के साथ कोल्ड ड्रिंक लेने से। इसमें गैसीय तत्व होते हैं। तला या बासी खाने से।

लाइफ स्टाइल गलत जीवन शैली से- तनावग्रस्त रहना, देर से सोना और सुबह देर से जागना। खाने-पीने का समय निश्चित न होना।

अन्य कारण- लीवर में सूजन, गॉल ब्लेडर में पथरी, फैटी लीवर, अल्सर या मोटापे से। डायबीटीज, अस्थमा या बच्चों के पेट में कीड़ों की वजह से। अक्सर पेनकिलर खाने से। कब्ज, अतिसार, अपच व उल्टी की वजह से।

घरेलू उपाय

- ❑ एक मुनक्के का बीज निकालकर उसमें मूंग की दाल के एक दाने के बराबर हींग या लहसुन की एक छिली कली रखकर मुनक्के को बंद कर लें। इसे सुबह खाली पेट पानी से निगल लें। इसके 20-25 मिनट बाद तक कुछ न खाएं। तीन दिन लगातार ऐसा करें।
- ❑ अजवायन, जीरा, छोटी हरड़ और काला नमक बराबर मात्रा में पीस लें। बड़ों के लिए दो से छह ग्राम, खाने के तुरंत बाद पानी से लें। बच्चों के लिए मात्रा कम कर दें।
- ❑ पांच ग्राम हल्दी या अजवायन और तीन ग्राम नमक मिलाकर पानी से लें।
- ❑ दो लौंग चूस लें या उन्हें उबालकर उस पानी को पी लें।
- ❑ पानी में 10-12 ग्राम पुदीने का रस ओर 10 ग्राम शहद मिलाकर लें।
- ❑ खाना खाने के बाद 25 ग्राम गुड़ खाने से गैस नहीं बनती और आंते मजबूत रहती हैं।
- ❑ बिना दूध की नींबू की चाय भी लाभ करती है, पर नींबू की बूंदें चाय बनाने के बाद ही डालें। इसमें चीनी की जगह हल्का सा काला नमक डाल लें, लाभ होगा।
- ❑ बेल का चूर्ण, त्रिफला और कुटकी मिलाकर (दो से छः ग्राम) रात को खाना खाने के बाद पानी से लें।
- ❑ लहसुन की एक-दो कलियों के बारीक टुकड़े काटकर थोड़ा सा काला नमक और नींबू की बूंदें डालकर गर्म पानी से सुबह खाली पेट निगल लें। इससे कॉलेस्ट्रॉल, एंजाइना और आंतों की टीबी आदि बीमारियां ठीक होने में भी मदद मिलेगी। गर्मियों में एक-दो और सर्दियों में दो-तीन कलियां लें।
- ❑ गैस बनने पर हींग, जीरा, अजवायन और काला नमक, बहुत कम मात्रा में नौसादर मिलाकर गुनगुने पानी से लें। इनमें से कोई एक चीज भी ले सकते हैं।
- ❑ आधे कच्चे, आधे भुने जीरे को कूट कर गर्म पानी से दो ग्राम लें। ऐसा दिन में दो बार एक सप्ताह तक करें। इसके बाद मोटी सौंफ को भून-पीसकर गुड़ के साथ मिक्स करके 6-6 ग्राम के लड्डू बना लें। दिन में दो-तीन बार लड्डू चूसें।
- ❑ हर बार खाने के साथ अजवायन भी खाएं तो

पाचन बढ़िया होगा। खाने में सादा के साथ-साथ काला नमक भी इस्तेमाल करें।

क्या खाएं

- फ्रूट और सब्जियां ज्यादा से ज्यादा खाएं। सब्जियों को ज्यादा तलें नहीं।
- साबुत की बजाय धुली व छिलके वाली दालें खाएं।
- सोयाबीन की बड़ियां खाएं।
- दही व लस्सी का प्रयोग करें।
- नीबू, पानी, सोडा, नारियल पानी, शिकंजी या बेल का शर्बत पीना अच्छा है।
- आइसक्रीम और ठंडा दूध ले सकते हैं।
- बादाम व किशमिश लें, पर काजू कम मात्रा में लें।
- सौंफ, हींग, अदरक, अजवायन व पुदीने का प्रयोग करना अच्छा है।
- मोटा चावल खाएं। यह कम गैस बनाता है, जबकि पॉलिश वाला चावल ज्यादा गैस बनाता है। पुलाव के बजाय चावल उबालकर खाएं।
- खाना सरसों के तेल में पकाएं। देसी घी भी ठीक है, लेकिन मात्रा सीमित रखें। वनस्पति घी और रिफाइंड से बचें।

इनसे बचें

- तेल-मक्खन व क्रीम आदि ज्यादा न लें।
- मैदे और रिफाइंड आटे से बनी चीजें और बेकरी प्रॉडक्ट जैसे कुलचे, पूरी, ब्रेड पकौड़ा, छोले-भटूरे, परांठे, बंस, बिस्कुट, पैटीज, बर्गर व फैन आदि न खाएं।
- नमकीन, भुजिया, मट्ठी न खाएं।
- चना, राजमा, उड़द व मटर आदि का प्रयोग कम करें। इन्हें बनाने से पहले भिगो लें। जिस पानी में भिगोऐं, उसको इस्तेमाल करने के बजाय फेंक दें।
- चाय-कॉफी ज्यादा न पीएं। खाली पेट चाय पीने से भी गैस बनती है।
- गर्म दूध भी गैस बनाता है। अल्सर वाले ठंडा दूध लें।
- सॉफ्ट-ड्रिंक्स या कोल्ड-ड्रिंक्स न पीएं।
- मोटी इलायची, तेजपत्ता, लौंग, जावित्री, जायफल आदि साबुत मसाले तेज गंध होने से पेट को नुकसान पहुंचाकर गैस की वजह बनते हैं। इन्हें पीसकर और कम मात्रा में लें।
- राजमा, छोले, उड़द, लोबिया या साबुत दालों से गैस बन सकती है।
- अरबी-भिण्डी और राजमा से परहेज रखें।
- कच्चा लहसुन, कच्चा प्याज व अदरक भी गैसा बनाता है।
- मूली-खीरे आदि से गैस की शिकायत हो तो उनका परहेज करें।
- अगर खाने का ज्यादातर हिस्सा फैट या कार्बोहाइड्रेट से आता है यानी रोटी, आटा व बेसन आदि ज्यादा खाते हैं तो गैस ज्यादा बनेगी।
- संतरा व मौसमी आदि एसिडिक फलों के रस से गैस बनती है। जूस के बजाय ताजे फल खाएं।
- खाली पेट दूध पीने और खाली पेट फल खासकर सेब और पपीता खाने से गैस बनती है।

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती चन्द्र कला जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	250/-
डॉ. पुष्पलता जी वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीन मेहन्दीरता जी विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री एच.पी. खंडेलवाल जी, विकासपुरी नई दिल्ली	100/-
श्री सेठी परिवार विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
फर्रूखनगर आश्रम के लिए	
श्रीमती चन्द्रकला जी राजपाल पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-

हंसो और हंसाओ

\- रवि शास्त्री

- **वैज्ञानिको** ने **पप्पु** को चांद पर भेजने का फैसला किया। आधे रास्ते जाकर
  पप्पु- रॉकेट से कुद गया।
  वैज्ञानिक-अरे **पप्पु** क्या हुआ क्यों कुद गया।
  पप्पु चिल्लाया-कमीनो आज तो अमावस्या है चाँद तो होगा ही नहीं।
- **साधु**-बच्चा तुझे स्वर्ग मिलेगा, लाओ कुछ दक्षिणा दे जाओ।
  लड़का-ठीक है दक्षिण में मैंने आपको दिल्ली दी।
  आज से दिल्ली आपकी हुई।
  साधु-दिल्ली क्या तेरे बाप की है जो मुझे दे रहे हो?
  लड़का-तो स्वर्ग क्या तेरे बाप ने खरीद रखा है जो तू उधार के प्लाट यहाँ बाट रहा है।
- **एक शराबी** ने 98.3 एफ.एम. पर फोन किया- मुझे तिलक नगर रोड पर एक पर्स मिला है जिसमें 15000 कैस एक आईफोन, 6 क्रेडित कार्ड और पल्लवी नाम की लड़की की आई.डी. मिली है।
  रेडियो-वाह आप कितने ईमानदार है तों आप उन्हें वो पर्स वापिस करना चाहेंगे।
  शराबी-नहीं!! मैं चाहता हूं कि पल्लवी जी के लिए एक दर्द भरा गाना हो जाए।
- **संता** के कोई संतान नहीं थी, उसने खुब मन्नते माँगी। तीर्थ यात्रा पर गया, देवी देवताओं के दर्शन किये, बहुत दिनों तक उपवास किया। तब भगवान प्रकट हुए और बोले-पहले शादी कर ले मेरे बाप।
- **एक औरत** हसबैंड क्या होता है?
  दुसरी औरत-अरे तुम्हें इतना भी नहीं पता, यह एक बैन्ड होता है जो बेलन से बजता है।

प्रहेलिका

\- आस्था आर्या

1. पकड़ नाक वह कान चढ़े। वश में उसके बड़े-बड़े।
2. हाथों बांधकर चलती साथ, सतत काम करती दिन रात।
3. दो ने दोनों पकड़ पांव, चले साथ में अगले ठांव।।
4. करे साफ चेहरा व हाथ, रहे जेब में हरदम साथ।
5. लग लग कहे तो ना लगे, मत लग कहे तो लग जाए।
6. बाल बिखेरे फिरती घर में, करे सफाई सारे नगर में।
7. काजल जैसा काला है, इसीलिए शरमाता है देखे जब प्यासी धरती आंसू खूब बहाता है।
8. एक तरफ लटका रहता है, ना पीता ना खाता है। साल महीने दिन छुट्टी के, सब कुछ हमें बताता है।

उत्तर:- (1) ऐनक (2) घड़ी (3) जूती (4) रूमाल (5) होंठ (6) झाड़ू (7) बादल (8) कलेण्डर

नहीं मिलता

(डॉ. दर्शनलाल आजाद, पानीपत)

ढूंढ़ने से भी आदमी ईमानदार नहीं मिलता।
इस दौर में बेगराज कोई यार नहीं मिलता।
भुख देने वाले बहुत गमखार नहीं मिलता।
हर सू नफरत ही नफरत प्यार नहीं मिलता।

ना समझों की भीड़ समझदार नहीं मिलता।
न झुकेन बिके ऐसा खुद्दार नहीं मिलता।।
मजबूरी लाचारी में अब मददगार नहीं मिलता।
बेकारी बहुत है रोजी रोजगार नहीं मिलता।

देहयाई का नाच कोई शर्मदार नहीं मिलता।
वेवफाओं के टोले हैं, वफादार नहीं मिलता।।
.... खेत खाये सच्चा पहरेदार नहीं मिलता।
देश तोड़ते बहुत मगर महमार नहीं मिलता।।

कुछ सवाल जवाब

- डा. अभिमन्यु खुल्लर

प्रश्नकर्ता-मैं, अभिमन्यु कुमार खुल्लर, आपकी तरह एक जीवात्मा उत्तरदाता-परमात्मा।

प्रथम किश्त में मैंने आपसे 26 सवाल (प्रश्न) किए थे। आपको ठीक-ठीक मालुम था कि मुझे थकान के कारण ही सवालों का क्रम बन्द करना पड़ा था। मेरी आपरेटेड खापेड़ी जिसमे दो छेद एवं एक दो इंची कट लगाकर ग्वालियर के सुप्रसिद्ध न्यूरोसर्जन डा. जे.पी. गुप्ता ने आपरेशन किया था, उसमें अवस्थित मेरा ब्रेन थक गया था। अब मैं पुनः ऊर्जावान हो गया हूं। क्या मैं प्रश्नों का क्रम जारी रख सकता हूं? हां क्यो नहीं।

प्रश्न- आपने बताया था कि आप ओ३म् हैं?

उत्तर- यही बताया था। ओ३म् मेरा निज, पर्सनल नाम है।

प्रश्न- फिर महादेव, शिव, विष्णु, गणेश, शान्ति, आदि भी परमात्मा कहे जाते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर- ये मेरे ही गुण विशेष हैं, पृथक् से ईश्वर या परमात्मा नहीं है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सम्मुल्लास में मेरे 100 नाम लिखकर अपने कथन का समापन इस प्रकार किया है। ''ये सौ नाम परमेश्वर के लिखे हैं परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं क्योंकि जैसे परमात्मा के अनन्त, गुण, कर्म, स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं। उनमें से प्रत्येक गुण, कर्म और स्वभाव का एक-एक नाम है। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने, बिन्दुवत हैं क्योंकि वेदादि शास्त्रों में परमात्मा के असंख्य गुण, कर्म, स्वभाव व्याख्यात हैं।

प्रश्न- ठीक हैं। समझ में आ गया कि निज नाम एक ही होता है, तुम परमात्मा हो और ओ३म् तुम्हारा निज नाम है। तुमने यह भी बताया था कि तुम्हारे अतिरिक्त मैं (जीवात्मा) और प्रकृति तीन ही अनादि घटक है। सम्पूर्ण विश्व का कार्य-व्यापार यही तीन घटक ही करते हैं। इस क्रम को इस द्वितीय गोष्ठी में जारी रखना चाहता हूं। अनुमति हैं?

उत्तर- है।

प्रश्न- मनुष्य और पशु-पक्षी की आत्मा में भेद हैं। या दोनों में एक ही प्रकार की आत्मा है।

उत्तर- सब चेतन जीवों में एक जैसी ही आत्मा होती है।

प्रश्न- हाथी और चींटी की आत्मा में क्या कोई अन्तर नहीं होता?

उत्तर- नहीं होता।

प्रश्न- दोनों के आकार में बहुत अन्तर हैं। कहां हाथी की अत्यंत विशाल काया और कहां चींटी अत्यन्त छुद्र! यदि चींटी गतिमान न हो तो सम्भावना दिखाई भी न पड़े।

उत्तर- काया या शरीर का अन्तर, आत्मा के कारण नहीं होता।

प्रश्न- फिर कैसे होता है।

उत्तर- शरीरों का अन्तर नर और नारी के, चाहे वह मनुष्य हो या अन्य जीव-जन्तु पक्षी आदि सभी के गुण सूत्रों के अनुसार होता है।

प्रश्न- गुण सूत्र किसे कहते हैं और ये कैसे कार्य करते हैं?

उत्तर- अभी तुम मोटसेरी-प्रारम्भिक कक्षा में पढ़ रहे हो। कठिन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए तैयारी तो पूरी हो जानने दो। फन्डामेंटल या मूल सिद्धान्त मस्तिष्क में ठीक-ठाक नहीं बैठते तो गूढ़ प्रश्न ऐसी उलझन में डाल देते हैं कि सब गड्डू-मडडू हो जाता है। अब मैं तुमसे प्रश्न करता हूं कि क्या तुम्हें पूर्व में दिए गए प्रश्नोत्तरों का ठीक-ठीक पूरा स्मरण है?

प्रश्न- हां है।

उत्तर- बताइए।

प्रश्न- परमपिता परमात्मा एक है। ओ३म उसका निज नाम है। बाकी नाम यथा महादेव, विष्णु, गणेश आदि उसके गुण, कर्म, स्वभाव को बतलाने वाले विशेषण है। तीन तत्व परमात्मा, आत्मा और प्रकृति अनादि होते। विश्व का, ब्रह्माण्ड

का सारा कार्य-व्यापार यही करते हैं। सब जीवों में एक ही एक जैसी आत्मा होती है। अकेला परमात्मा ही, बिना किसी की सहायता के सृष्टि निर्माण, पालन और संहार करता है। आदि।

सृष्टि-रचना, रचना का मटोरियल, रचना किसके लिए, जीवात्मा का स्वरूप सृष्टि रचना कितनी काला अवधि के, सुख, दुःख का कारण, ईश्वर का न्यायकारी कार्य सभी मूलभूत बाते हैं जिन्हें तुम्हें पूर्णतया आत्मसात कर लेना चाहिए जिससे डिगो नहीं, अडिग रहो। फिर तुम कोई भूल नहीं करोगे।

प्रश्न- बहुत कुछ समझ में आ गया है। आत्म सात करने की प्रक्रिया भी सतत् चल रही है। पर अभी पहिली बात में ही कभी-कभी अस्थिर चित्त हो जाता हूं। पौराणिक भारतीय भाई-बहनों को विभिन्न भगवानों की जिसे वे देवता भी कहते हैं, पूजा करते हुए देखता हूं। ईसाईयों का गॉड है और मुसलमानों का अल्लाह।

उत्तर- तुम्हारे पौराणिक भाई पूजा उपासना मेरी ही करते हैं, पत्थर की मूर्तियों में मुझे ही मान कर। इससे सिद्ध होता है कि सृष्टि रचना चेतन निराकार ईश्वर ही कर सकता है। इसका ज्ञान उन्हें नहीं। पत्थर पूजा कर वे बेरोक, भ्रष्टाचार, पापाचार करते है तब उन्हें पूर्ण विश्वास रहता है मूर्ति कोई देख तो नहीं रही, कही जाएगी भी और न किसी को बताइगी। मुसलमान और ईसाई भाई भी एक ही परमात्मा को मानते है। परन्तु उन्हें समझ नहीं कि निराकार और न्यायकारी परमात्मा को अपने कार्य के लिए किसी एजेन्ट की जरूरत नहीं।

प्रश्न- यह सर्वविदित, प्रचारित तथ्य है कि वेद तुम्हारी वाणी है, ज्ञान है और सृष्टि के प्रारम्भ में ही यह ज्ञान तुमने ऋषियों के माध्यम से मानव मात्र के लिए दिया है।

उत्तर- ठीक बात है।

प्रश्न- इन चारो वेदों में से किसी वेद का एक मन्त्र बताओ जो यह बताता है कि ईश्वर एक, एक ही दूसरा नहीं।

उत्तर- अथर्ववेद का सुप्रसिद्ध मन्त्र है- यत एतं देवेमेकवृतं वेद। 13.4.15। न द्वितीयो, न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। 13.4.16। न पञ्चमों, न षष्ठ न सप्रमो नाप्युच्यते। 13.4.17। न अष्टमो, न नवमों दशमो नाप्युच्यते। अर्थात् वह अकेला वर्तमान है, न दूसरा ना तीसरा व चौथा कहा जाता है। वह न आठवां, न नवां, न दसवां ही कहा जाता है।

- 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर ग्वालियर-474001। फोन-0751-2425931

पैसे का ग्रुप

श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपुरा बहादुरगढ़

मनुष्य जब जन्म लेता है तब उसका वजन ढाई किलो होता है और अंतिम संस्कार या फिर अग्नि संस्कार के बाद उसकी राख का वजन भी ढाई किलो ही होता है। जिन्दगी का पहला कपड़ा जिसे अबला कहते हैं उसमें जेब नहीं होती। जिन्दगी का अन्तिम कपड़ा जिसे कफन कहते हैं उसमें भी जेब नहीं होती। तो इस बीच के समय में जेब के लिए इतनी मुसीबत किसलिए, इतनी भाग दौड़ किस लिए? इतनी निन्दा और चुगली किस लिए? खून लेने के लिए ग्रुप चैक कराते हैं कि किस ग्रुप का है? परन्तु पैसे लेते समय जरा चैक करो कि किस ग्रुप का है। न्याय का है, या हाय का है अथवा बलात का है। गलत ग्रुप का पैसा आ जाने से ही आज घर-घर में झगड़े,अशान्ति और क्लेश है। हराम और हाय का पैसा गलत जगह पर ही प्रयोग होता है जैसे जिमखाना, दवाखाना, क्लब और बार आदि और साथ में कमाने वाले की भी शान्ति खत्म कर देता है। इसलिए जब बैक बैलेनस बड़ने लगे लेकिन परिवारमें बैलेनस घटने लगे तो समझे कि यह पैसा हमें रास नहीं आ रहा है। तब जरा सोचे.....?

भूत-प्रेत आदि की क्या वास्तव में कोई सत्ता है या केवल हमारा भ्रम?

– गंगाशरण आर्य

भूत-प्रेत के नाम से बच्चों व बड़ों के मन में एक अज्ञात भय समाया रहता है। अक्सर बाल्यकाल से ही हर किसी ने भूत-प्रेत आदि के किस्से-कहानियाँ अपने मित्रों से, सगे-सम्बन्धियों से या टी.वी. इत्यादि के माध्यम से देखी व सुनी होंगी लेकिन ज्यादातर लोग इन्हें जीवन का भयावह सत्य मानकर स्वीकार कर डरते रहते हैं, कोई-कोई ही अपने मन से उनके घर डर को हटाकर उनकी वास्तविकता को जानने का प्रयास करता है। यह भूत-प्रेत आदि कब और कैसे मनुष्य की जीवन रूपी गाड़ी में प्रवेश कर जाते हैं? पता ही नहीं चलता। इसलिए बस यही जानना है कि क्या वास्तव में मनुष्य जीवन को हिलाकर रख देने वाले भूत-प्रेत आदि की कोई सत्ता है भी या यह केवल हमारे मन में छिपा कोरा भ्रम। आईए! इस पर गहराई से चिंतन करने का प्रयास करते हैं?

भूत का नाम सुनकर लोग अक्सर कोई डरावनी सी तस्वीर अपने मन में बना लेते हैं वे समझते हैं कि हमारे बीच में रहने वाले लोगों में से कोई जब अकस्मांत (अचानक) मर जाता है तो उसकी सद्गति न होने से वह भूत बन जाता है जबकि केवल हमारी कल्पना मात्र के कारण ही हमारी ऐसी सोच है क्योंकि अगर अकस्मात मरने पर भूत बन जाते हैं तो हर रोज हमारे आस-पास रहने वाले अनेक जीव जैसे मच्छर को ही ले ले उसे तो हम ही मृत्यु के गाल में पहुँचा देते हैं अर्थात् वह तो बेचारा घूम रहा था हमने हमें न काट जाए इस डर से उसे मार दिया। उसकी भी तो घूमते-घूमते अचानक मृत्यु हो गई यही नहीं कसाई मीट की दुकानों पर रोजाना हमारी लिप्सा की पूर्ति के लिए न जाने कितने ही मुर्गे व बकरे आदि को बिन मौत के ही मार देते हैं। इसके अलावा भी ऐसे ही न जाने कितने ही जीव जैसे चंटी, जूँ, चूहे, साँप कॉकरोच आदि रोजाना हमारे हाथों अचानक मृत्यु को प्राप्त होते हैं, क्या उनमें आत्मा नहीं होती? क्या वे सारे के सारे भूत बन जाते हैं? अगर वे भूत बनते हैं तो कभी किसी ने मच्छर, मुर्गे या बकरे आदि का भूत क्यों नहीं देखा? कभी कोई किसी कीड़े या जूँ आदि के भूत से डरा हो ऐसा सुनने में क्यों नहीं आता? आएगा भी क्यों, क्योंकि हमने कभी इनकी मृत्यु पर इनके भूत बनने का विचार ही नहीं किया, किया तो केवल यह कि अच्छा है मेरे हाथों इसकी गति हो गई, मरना तो इसे था, जूनी छुटी इसकी अब अगली जूनी (योनि) में इसे जल्दी ही जन्म मिलेगा यदि ऐसा ही विचार हम किसी भी मनुष्य की अचानक मृत्यु होने पर कर करने लगेंगे तो हमारी कल्पना का भूत जल्दी ही गायब हो जाएगा। थोड़ा और विचार करो कि यदि वास्तव में अचानक मरने पर मृतक भूत बन जाता है कि फिर तो देश-विदेश में होने वाले परमाणु परीक्षणो के कारण और जो सुनामी एवं भूकम्प ओर बाढ तथा विभिन्न रूपों में आने वाली प्राकृतिक आपदाएं आने पर जो लोग मरे हैं वे तो सारे के सारे भूत बन जाते, जिनकी संख्या लाखों नहीं अरबों में है। अगर ऐसा हुआ है तो अखबारों में और मीडिया पर रोजाना भूतों के ही चर्चे क्यों नहीं आते? और यदि आप कहो कि भूत केवल भारत के ही मरने वाले बनते हैं तो भी कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के युद्ध में तो करोड़ों की संख्या में सेना मरी थी। यदि वास्तव में भूतों का कोई अस्तित्व होता तो उनके भूतों के डर का साया आज तक कुरुक्षेत्र में हुए महाभारत के युद्ध में तो करोड़ो की संख्या में सेना मरी थी। यदि वास्तव में भूतों का कोई अस्तित्व होता तो उनके भूतों के डर का साया आज तक कुरूक्षेत्र में दिखाई देता और दिल्ली ही नहीं पूरे देश में सुनाई देता। इसी प्रकार पानीपत की लड़ाई, प्लासी की लड़ाई, बक्सर का युद्ध और इतिहास उठाकर देख लो देश के बँटवारे के समय होने वाली मारकाट के दौरान, जलियावाला बाग हत्याकांड में लोग अपनी मौत नहीं बल्कि बिना ही मौत मारे गए थे, और भोपाल गैस कांड में भी कितनी बड़ी संख्या में लोगों ने अपने प्राण गवाएं थे क्या वे सब अचानक नहीं मरे थे? क्या उनके भूतों की चर्चा कभी सुनी है किसी ने? नहीं, क्योंकि ये भूतादि काल्पनिक है और सिर्फ हमें डराकर धन

लूटने वालों के द्वारा फैलाये गए जाल का एक हिस्सा है, हमें व हमारी भावी पीढ़ियों को लूटते रहने के लिए वैचारिक प्रदूषण के तहत बनाए गए षडयंत्र की एक कड़ी है और कुछ नहीं। इस भूत-प्रेतादि के भय के पीछे सयाने, सेवड़े आदि का हाथ होता है, वे छल-कपटी रात्रि के समय भयंकर डरावने मुखौटे आदि लगाकर एकान्त स्थान के आस-पास विचरण करते रहते हैं या वृक्षों पर छुपकर बैठ जाते हैं व तरह-तरह की डरावनी आवाजें निकालते हैं और राहगीरों पर पत्थर या जलते कोयले आदि बरसाते हैं ताकि लोगों को लूट सके और मजबूरीवश उस रास्ते से जाने वाले व्यक्ति इन्हें व इनकी हरकतों को देखकर भय का कारण मूर्छित हो जाते हैं, ये फिर उनका धन लूट लेते हैं और जो मूर्छित नहीं होते वे भाग खड़े होते हैं एवं अपने आस-पास के लोगों में इन्हें भूत-प्रेतादि मानकर इनका विचित्र ढंग से बखान करते हैं जिससे इनका दुष्प्रचार और भी अधिक हो जाता है तथा उनके सम्पर्क में आने वाले अबोध जीवन पर्यन्त इन्हीं पूर्वाग्रहों से ग्रसित रहते हैं। इस प्रकार ये शराबी, कबाबी और व्यभिचारी लोग उपरोकत हथकण्डे अपनाकर अन्धविश्वासियों का खूब धन लूटते आए हैं। अत: हमारे विचारों में दृढ़ता होनी चाहिए क्योंकि भूत-प्रेतादि पर विश्वास या उनका भय विचारों की दुर्बलता और मस्तिष्क की कमजोरी एवं अविद्या के कारण ही होता है। इसे बौद्धिक रोग भी कह सकते हैं क्योंकि सत्य जाने बिना ही लोग अपनी बुद्धि पर ताला लगाकर उनकी सत्ता मानने लगते हैं, बस विचार शून्य होकर डर के आगे घुटने टेक देते हैं। लोग अक्सर दोहरी मानसिकता लेकर जीते हैं। एक तरफ तो वह कहते हैं कि आत्मा 'अज' है, अमर है अर्थात् आत्मा का न तो जन्म होता है और नहीं मृत्यु होती है और दूसरी तरफ यह मानते हैं कि जिन आत्माओं की गति नहीं होती वे भूत बन जाती हैं और अन्य मनुष्य मात्र को तंग करती है। यहाँ पहला प्रश्न तो यह है कि सद्गति न होने से जिस आत्मा ने शरीर धारण ही नहीं किया अर्थात् जिसके पास शरीर है ही नहीं वह बिना शरीर के किसी को भी तंग कैसे कर सकती है? दूसरा प्रश्न है कि भूत बनकर आत्मा केवल मनुष्यों को ही क्यों तंग करती है? जब आत्मा का जन्म ही नहीं होता और वह मरती भी नहीं है तो भूत कोन बनता है? शरीर का ही जन्म होता है और मृत्यु भी शरीर की ही होती है तो पिुर क्या शरीर ही भूत होता है? असल बात यह है जो उत्पन्न हो चुका होता है उसे भूत ही कहते हैं क्योंकि भूत शब्द 'भू' धातु को क्त प्रत्यय लगाकर बनता है और 'भू' का अर्थ ही होता है होना अर्थात् जो हो चुका है इसलिए ही पृथ्वी, जल, वायु, तेज (अग्नि) व आकाश आदि को भी पंचमहाभूत कहा जाता है और इनसे ही हमारा यह भौतिक शरीर बना है जो मृत्यु के पश्चात इन्हीं में विलीन हो जाता है। अत: वह भूत कैसे बन सकता है? हाँ केवल इसी अर्थ में ही मृत शरीर को दाह संस्कार करने के पश्चात् भूत कहा जा सकात है कि कभी वह भी उत्पन्न हुआ था, ठीक इसी प्रकार जैसे बीते हुए काल (समय) को भी भूतकाल कहा जाता है क्योंकि वह बीत चुका है कभी वर्तमान था एवं प्रेत निष्प्राण शरीर को कहते हैं जो किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न कर ही नहीं सकता। 'आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने भी सत्यार्थप्रकाश में इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि जिस शरीर से जीव निकल जाए उसे प्रेत कहते हैं अर्थात् जीव निकला शरीर यानि कि मृतक को ही प्रेत कहा जाता है और जब उस शरीर का दाह हो चुका हो तब उसका नाम भूत होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरुष था जितने उत्पन्न हों, वर्तमान में आ के न रहें वे भूतस्थ होने से उनका नाम भूत है। ऐसा ब्रह्मा से लेकर आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है।

हमें भूत-प्रेत आदि से डर क्यों लगता है? इसका एक ही कारण है हमारा अवचेतन मन (Subconcious Mind)। जिसे शुभ संकल्पो वालां होना चाहिए था परन्तु 'वैदिक' विद्या के अभाव में वह अविद्या के संस्कारों को ग्रहण करता चला जाता है। प्राचीन काल में लोग वैदिक विद्या के अनुरूप आचरा करते थे इसलिए उनकी विचार शक्ति अत्यन्त प्रबल होती थी यही कारण है कि रामायण और महाभारत काल में कभी कहीं भी किसी भूत-प्रेत आदि का किस्सा सुनने में नहीं आया। राम, लक्ष्मण और सीता ने अपने जीवन के 14 वर्ष निर्जन भयानक वन में रहकर

बिताए, पाण्डव पुत्रों युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि ने भी अपनी माँ कुन्ती के साथ लम्बे अरसे तक वन में जीवन बिताया। कभी टी.वी. पर दिखाई जाने वाली रामायण या महाभारत में भी किसी ऐसी घटना का चित्रण नहीं किया गया, क्या उनके समय में भूतों की कोई सत्ता नहीं थी? यही नहीं भारत की महान गौरव गरिमा का व्याख्यान करने वाले हमारे ऋषि महर्षियों ने भी अपना अधिकांश जीवन घोर घने जंगलों में बिताया है उन्होंने भी कहीं वैदिक साहित्य में किसी भूत का जिक्र नहीं किया। कारण भूत होते ही नहीं है। कितनी रातें महर्षि दयानन्द जी ने भी अपने जीवन की वनों में अकेले रहकर बितायी होंगी लेकिन उनके द्वारा लिखित साहित्य में भी उन्होंने कहीं भूत कोई योनि है ऐसा नहीं बतलाया। स्वामी श्रद्धानन्द ने तो गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना भी बीहड़ वन में गंगा तट पर की थी। क्या तब भूत नहीं होते थे? नहीं ऐसा नहीं है आज भी वही संसार है, आज भी लोग उसी प्रकार जन्मते है मरते हैं, बदलते हैं तो केवल हमारे विचार जिनके कारण आज हम भूत-प्रेम, डाकिनी, शकिनी आदि के भय से ग्रसित हो गए हैं। बदली है तो हमारी लौरियाँ। प्राचीन काल में माताएँ अपने बच्चों को वीर बहादुर बनने की लौरियाँ दिया करती थी, माता शकुन्तला अपने इकलौते पुत्र 'भरत' को शेरों के साथ वन में खेलने की प्रेरणा करती थी जिसके नाम से आगे चलकर इस महान देश 'आर्यावर्त' को भारत नाम से जाना जाने लगा। लेकिन आज की माताएं बाल्यकाल में बच्चों को हाऊ आ गया, बिलाऊ आ गया, भूत आ गया चुप करके सो जा, झोली वाला बाबा तुझे उठाकर ले जाएगा आदि कह कर डरा धमका कर सुलाती है। इस प्रकार भूत-प्रेत, चुडैल आदि का चित्रण बाल्यकाल में हमारे मस्तिष्क में अंकित हो जाता है उसे हम सत्य मानने लगते हैं। जबकि वास्तव में भूत किसी ने देखा ही नहीं होतां जिससे भी पूछा वह यही कहता है कि फलां व्यक्ति ने बताया कि उसने भूत को देखा है और उस बताने वाले व्यक्ति से पूछो तो वह भी यही कहता है कि मैंने नहीं उसने देखा है ऐसा मेरा फलां मित्र ने मुझे बताया थां इस प्रकार इन बातों का कोई आधार नहीं होता केवल बातचीत के द्वारा ही इन कल्पनिक भूतों का प्रचार हो जाता है। उपरोक्त बताए भूत और हमारे बचपन के किस्से कहानियों के भूत की व्याख्या में दिन-रात का अन्तर है जो अज्ञानता के कारण हमोर मस्तिष्क में डेरा जमाए बैठा है। बचपन से ही हमने हमारे माता-पिता से और उन्होंने अपने बड़ों व अगड़-पड़ौसियों से भूत-प्रेत की अनेक कहानी और किस्से सुन रखे होते हैं जो अवचेतन मन में दबे पड़े रहते हैं और बाद में हमारे समक्ष जरा सी भी परेशानी व दु:ख आने पर हमारे माता-पिता के डर का कारण बनते हैं और उनका भय देखकर हम भी डरने लगते हैं। वे किस्से कुछ इस रूप में फैले हुए हैं जैसे कि फलां व्यक्ति के शरीर में भूत, जिन्न, चुडैल ऊपरी हवा या भटकती आत्मा का साया चढ़ गया जिससे उसकी बैचेनी बढ़ गई और वह अचानक तोड़-फोड़ करने लगा, वह अपने कपड़े फाड़ने लगा या उस औरत के शरीर में उसका भूत आता है, फलाने स्याने या झाड-फूंक करने वाले ने उसका भूत उतार दिया, वह भूत उसे बहुत ऊपर उछाल देता है और अगर आठ-दस व्यक्ति मिलकर भी उसे पकड़ ले तो वह सबको एक साथ उठाकर पटक देता है, उसके अन्दर जो भूत हैं उसमें बहुत ताकत है, उस औझा ने उसके भूत को देखा है वही उसे भगा सकता है या बाँध सकता है या बोतल या मटके में बन्द कर सकता है। कोई कहता है कि भूत पीपल व बरगद पर रहता है, भूत काला होता है, उसके पैर उल्टे होते हैं तो कोई कहता है कि भूत बेरी या या टूटे-खण्डहरों में रहता है, भूत लम्बा होता है, उसके दाँत निकल रहते हैं, उसका चेहरा भयंकर होता है, भूत रात को बारह बजे निकलते हैं, चुडैल बहुत बदसूरत होती है, वह आदमी का खून पीती है। भूत बहुत ताकतवर होता है वह कुछ भी कर सकता है, उसके शरीर में आकर कभी फल तो कभी मिठाईयाँ मांगता है और मना करने पर किसी को भी नुकसान पहुँचाता है। आदि-आदि बातें इन कल्पित भूतों के विषय में प्रचारित हैं। हमारी ये मनमानी कल्पित धारणाएं ही हमारे डर की असली वजह हैं। ये कल्पित बातों के संस्कार ही बुद्धि में स्थाई हो जाते है जिसके कारण व्यक्ति डरने लगता है। जैसे कोई व्यक्ति जिसने इन बातों को सुन रखा हो यदि अंधेरे

में वह किसी कच्चे रास्ते से जा रहा होता है तो कई बार आस-पास के आधे कटे सूखे वृक्ष स्पष्ट दिखाई नहीं देते और उसे पलभरे लिए उसी सुने हुए भूत की झलक (जो असत्य है) दिखाई देने लगती है, यही नहीं उसे पत्तों की आवाज भी डराने लगती है उसे ऐसा अनुभव होता है कि वास्तव में उसके पीछे कोई आ रहा है जिसे पलट कर देखने की भी उसमें हिम्मत शेष नहीं रहती और भयग्रसित होकर या तो उसकी तत्काल मृत्यु हो जाएगी या वह भाग खड़ा होगा और यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि घर जाते ही उसे बुखार हो जाएगा या डर से वह कांपने लगेगा और कहेगा कि मैंने भूत देखा है। इस प्रकार जब दूसरे लोग उसकी बात सुनते हैं तो उसकी बात पर विश्वास करके भूत को मानने लगते हैं और स्वयं तो भयभीत हो ही जाते है, अपने बच्चों को भी ये बात बताकर डराने लगते हैं। बच्चा निडर होता है लेकिन बचपन में माता-पिता आदि के द्वारा उसके भीतर अनहुए भूत के भय का बीजारोपण कर दिया जाता है जो सही मार्गदर्शक के अभाव में कभी न कभी उसके सामने प्रकट हो जाता है। परन्तु यदि बाल्यकाल से ही बच्चों को हम भूत आदि से न डराए तो बड़े होने पर भी वे कभी नहीं डरेंगे। लेकिन यह बालपन की उम्र ऐसी होती है जिसमें बच्चा तर्कशील नहीं होता, उसकी तर्क प्रणाली विकसित नहीं होती इसएि वह उपरोक्त बातों को सत्य मानकर अपने अवचेतन मन में बैठा लेता है और फिर जीवन भर ये भ्रम उसका पीछा नहीं छोड़ते। ऐसा ठीक उसी प्रकार होता है जैसे दिन में यदि कोई भूत की डरावनी फिल्म देखता है तो राम में अक्सर सपने में डर जाता है। वर्तमान में तो बच्चे ऐसे नाटक या फिल्म आदि देखने के बाद रात में एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने से डरने लगते हैं। ठीक ऐसे ही जब व्यक्ति रात में कहीं जा रहा होता है तो उसे कई बार भ्रम होने लगता है कि उसके पीछे कोई है और वह बिना ये जाने ही कि वास्तव में उसके पीछे कोई हैया नहीं बस सुनी हुई बातों के डर से भाग खड़ा होता है लेकिन ऐसा तभी होता है जब वह सुनसान रास्ते पर अकेला जा रहा होता है, कई जन साथ में होने पर ऐसा कभी नहीं होता और रात में ही उसे भूत-प्रेत आदि का भय होता है जब वह सुनसान रास्ते पर अकेला जा रहा होता है, कई जन साथ में होने पर ऐसा कभी नहीं होता और रात में ही उसे भूत-प्रेत आदि का भय होता है अगर भूत-प्रेत आदि की कोई योनि है तो दिन में किसी ने कभी भूत क्यों नहीं देखा? लगभग किस्से रात के ही सुनने में आते हैं। अगर रात में ही भूत आते हैं तो चोरों को रात में चोरी करते समय भूतों का डर क्यों नहीं सताता? जितने भी गलत काम होते हैं वे रात में ही होते हैं गलत कामों को करने वालों को क्या इन भूतों से डर नहीं लगता? दिल्ली जैसे विकासशील नगर में दिन-रात इंजीनियर व मजदूर आदि बड़े-बड़े सरकारी प्रोजैक्ट (जैसे मैट्रो लाईन आदि बिछाने का कार्य) पूर्ण करने के लिए कार्य करते रहते हैं उन्हें कभी किसी भूत ने डराया हो ऐसा तो कहीं सुनने में नहीं आया। और वैसे तो भूत-प्रेतादि बाधा पुरुष और स्त्री दोनों में ही पाई जाती है परन्तु आपने यह सुना होगा कि भूत-प्रेत और डायन चुडैल आदि घर की युवतियों व महिलाओं को ही ज्यादा परेशान करते हैं पुरुषों में भूत-प्रेतादि आए हो ऐसा बहुत कम सुनने में आता है क्यों? क्योंकि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं घर की चार दिवारी में रहती हुई दोहरे मापदण्डों वाली सामाजिक स्थिति का वहन करती हुई अपना मानसिक संतुलन बनाए रखने की कोशिश करती है, इसके लिए अक्सर महिलाएं स्वयं को घर के कामों में उलझाकर अपनी मानसिकता का बोझ थोड़ा हल्का करने का प्रयास भी करती हैं लेकिन थोड़ी सी मुश्किल पड़ते ही वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठती हैं उसकी चीख-पुकार जब कहीं नहीं सुनी जाती अर्थात् भावनाओं के दमन के कारण वह आधि-व्याधि अर्थात् मानसिक रोगों का शिकार हो जाती हैं। दूसरी ओर पुरुष को पुरुष प्रधान समाज होने के कारण अपने मन की भड़ास निकालने के अवसर मिल जाते हैं। ज्ञान वृद्धि के ज्यादा अवसर, मन की उलझनें या गुब्बार निकालने के लिए मित्र-मंडलियां, शराबों के दौर, परिवार में अपनी मनवाने की स्थिति में होने के कारण वह बहुत कम ही मानसिक रोगों का शिकार हो पाता है। आमतौर पर पुरुष अविवाहित रहरकर भी दुनियां में आसानी से जीवन व्यतीत कर सकता है पुरुष बहुत सी चारित्रिक

और नैतिक जंजीरों से मुक्त होते हैं लेकिन महिलाओं के लिए स्थिति इसके एकदमर विपरीत होती है यहीकारण है कि अक्सर भूत-प्रेतादि बाधा कहीं जाने वाली मानसिक बीमारियों का शिकार ज्यादातर महिलाएं होती है। इसके अतिरिक्त 12 से 15 वर्षकी उम्र में लड़कियों में मासिक धर्म शुरु होने पर उसमें गड़बड़ी के कारण और शरीर के हारमोनल चेंज के कारण कई युवतियों में हिस्टीरिया नामक बीमारी हो जाती है जिसे लोग भूत-प्रेत या चुडैल आदि कहने लगते हैं जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं है, भूत-प्रेत आदि का मानना केवल धन-लोलुप ओझा एवं पाखण्डी बाबाओं आदि के द्वारा प्रचारित वैचारित प्रदूषण है और कुछ नहीं।

वेद विद्या के लुप्तप्राय होने के कारण ही हम उपरोक्त तथ्यों को सत्य मान लेते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे भगवान के विषय में भी अक्सर लोग कहते है कि वह सर्वशक्तिमान है कुछ भी कर सकता है, उसकी मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। यदि वास्तव में ईश्वर की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता तो ये अकस्मात मरने वाले लोग अपने आप उसका तो कार्य ही यही है कि वह सब मनुष्यों को मृत्यु के पश्चात उनके कर्मानुसार अगली योनि में जन्म दे, तो इन भूत बनने वालों को ईश्वर अगली योनि में जन्म क्यों नहीं देगा? अरे नादानों ईश्वर को सर्वशक्तिमान इसलिए नहीं कहते कि उसकी मर्जी संसार में चलती है बल्कि इसलिए कहते हैं कि उसे अपने कार्यो को करने में किसी का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती और जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख-दु:ख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है? अब यदि ईश्वर की सर्वव्यापी सत्ता को ये लोग मानते हैं तो फिर ये यह विचार क्यों नहीं करते कि सर्वशक्तिमान प्रभु अपने कार्य में गलती कर ही नहीं सकता। इन्हें तो ईश्वर पर विश्वास ही नहीं है यदि होता तो गलत कार्य करने से डरते भूत-प्रेत आदि से नहीं। वह तो केवल हमारा भ्रत ही है और कुछ नहीं। महर्षि दयानन्द का मन्तव्य है कि अज्ञानी लोग वैद्यक शास्त्र वा पदार्थ विद्या के पढ़ने, सुनने और विचार से रहित होकर सन्निपातज्वरादि शारीरिक और उन्मादादि मानस रोगों का नाम भूत प्रेतादि धरते हैं। वस्तुत: मन की दुर्बलता एवं विचारों की कमजोरी से यह भूत का भ्रम सवार हुआ करता है। शक्तिशाली विचारशील तथा बौद्धिक व्यक्ति पर कभी भी भूत का भ्रम सवार होता ही नहीं है। यह प्रक्रिया ठीक ऐसे ही होती है जैसे हमारा शरीर तभी रोगी होता है जब शरीर की जीवनी शक्ति कमजोर हो जाती है इसी प्रकार जब हमारी वैचारिक शक्ति में न्यूनता आ जाती है तब ही हमें भूत-प्रेतादि का भ्रम होता है और हम भयभीत हो जाते हैं।

अंत में पाठकों से अनुरोध है कि यदि अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना है तो बाल्यकाल से ही अपने बच्चों को बिना अस्तित्व वाले भूत-प्रेतों के नहीं बल्कि अपना इतिहास बनाने वाले वीरों राम, कृष्ण आदि की गौरवगाथाएं कहानी व किस्सों के रूप में सुनाया करें और इस प्रकार की भ्रान्तिपूर्ण एवं समाज को भयभीत कर देने वाली मिथ्या धारणाओं को कभी भी पनपने ना दें ताकि भयरहित समाज की स्थापना हो सकें तभी हम व हमारे देश का भावी भविष्य सुखों से पूरित हो सकेगा।

– चरित्र निर्माण मण्डल, ग्राम-शाहबाद,
मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61, मो. 9871644195

सूचना

प्रसन्नता और हर्ष का विषय है कि आचार्य राजहंस जी मैत्रेय द्वारा योग साधको की उन्नति के लिए लिखित महर्षि पतञ्जलि प्रणीत, ''योगदर्शन'' पर राजभाष्य एक सरल सुबोध वैज्ञानिक दृष्टि में पुस्तक छप चुकी है। जो योग साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी ही नहीं अपितु आत्मिक उन्नति में मील का पत्थर साबित होगी।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्र:
पतंञ्जलि वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र
आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

चौं. राजपाल जी निठारी निठारी, दिल्ली	25000/-
श्री सत्यप्रकाश जी वशिष्ठ शक्ति नगर, बहादुरगढ़, हरियाणा	12000/-
श्री श्यामलाल जी गुप्ता, श्यामलाल एण्ड सन्स, बहा.	12000/-
श्री प्रेमचंद बंसल एवं श्री श्यामलाल बंसल (माता गिन्नी देवी स्मृति में), बहादुरगढ़	11000/-
श्री छोटेलाल जी सुपौत्र नामकरण संस्कार के अवसर पर ढाणी साल्हावास	5100/-
चौ. चांदराम जी तहलान गजराज होटल, बहादुरगढ़	5100/-
श्री आनन्द जी गुप्ता, शालीमार बाग, दिल्ली	5000/-
श्री कुलदीप प्रकाश सैक्टर-93, नोएडा	5000/-
प्रधानाचार्य कर्ण सिंह जी डबास, माजरा दिल्ली द्वारा संग्रह	2500/-
ग्राम पंचायत परनाला बहादुरगढ़	2100/-
चौ. चन्द्रभान जी सुपौत्र के विवाह संस्कार उपलक्ष्य में विकासपुरी	2100/-
श्री अभिमन्यु जी c/o स्व. चौ महासिंह जी दहिया स्मृति मध्य पंजाबी बाग, नई दिल्ली	2100/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	2000/-
श्री हरपाल सिंह ग्राम जौनियावास	2000/-
श्री विक्रम विजय जी विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100/-
राम टाटा पिक अप यूनियन बहादुरगढ़	1100/-
श्री अनिल जी मलिक टीचर कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री अंगिरामुनि सुपुत्र श्री वैद्य भीमसिंह जी आर्य सोलधा झज्जर	1100/-
श्री विकास मैहता सुपुत्र स्व. श्री सोमनाथ जी आर्य गुड़गांव	1000/-
मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र जी शर्मा बराही रोड, बहादुरगढ़	1000/-
श्री प्रभुदयाल जी ठुकराल व शरद ठुकराल मनोहर नगर, दि.	600/-
यशांक सुपुत्र श्री राहुल जी खन्ना गाजियाबाद	501/-
श्री राज सिंह जी दहिया गुड़गांव हरियाणा	501/-
श्री चन्द्रबोस सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी ग्राम बुपनिया	500/-
श्री सत्यपाल जी वशिष्ठ शक्तिनगर, बहादुरगढ़	501/-
श्री सुहान गुप्ता जी द्वारका दिल्ली	500/-
श्री नकुल सुपुत्र श्री प्रदीप कुमार नेताजी नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री प्रेमसागर दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	501/-
श्री साहिल अभिषेक दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	501/-
श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा, बहादुरगढ़	500/-
श्री निदान आर्य लडरावन झज्जर	500/-
श्री राजकुमार जी परनाला, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

श्री हरीश शर्मा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	100 /-, 10 किलो आटा, 1 किलो दाल, चीनी, मुंगफली
श्री कृष्ण बहादुर चौहान, ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	10 कम्बल
श्री सत्यवीर सिंह दलाल धर्मविहार, बहादुरगढ़	चावल 25 किलो आटा, आटा 10 किलो, 2 किलो तेल, 1 किलो मुंगफली
श्री राजकोर देवी परनाला बहादुरगढ़	151 रूपये, कम्बल 11,शाल, 8 कम्बल, 3 किलो चीनी, आटा 5 किलो
श्री नवीन जी वाही एम.आई.ई. बहादुरगढ़	2 कम्बल
श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टीकरी कला, दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री सुमित काद्यान दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	लड्डू 5 किलो, चावल 10 किलो, आटा 10 किलो
कबीर आश्रम लाईन पार, बहादुरगढ़	बच्चों का एक समय विशिष्ट भोजन, बच्चो को टोपे वितरण, पैन वितरण
श्री दीपेन्द्र सुपुत्र श्री भूपसिंह डबास, शनि मन्दिर, टीकरी दिल्ली	1 टीन सरसो तेल,
श्री कर्मवीर जी नागपाल झज्जर	एक दिन भोजन खाद्य सामग्री, चावल, आटा, घी, चीनी सब्जी आदि।

विशिष्ट भोजन

स्व. महाबीर जे.ई. सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री धनश्याम जी शर्मा, लाईनपार,बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्रीधर धर्मेन्द्र जी वैनीवाल ऑटो मार्किट, बहा.	1 समय का विशिष्ट भोजन

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्री वैनीवाल परिवार की तरफ से सैक्टर-7, बहादुरगढ़	500/-
श्री राजीव जी जिंदल c/o श्री एस के अग्रवाल, अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ	2100/-
श्री विनोद सिंघल जी अग्रवाल कॉलोनी c/o एस.के. अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री महेन्द्र जी सैनी सुपुत्र श्री जोगीराज जी सैनी बहादुरगढ़	1100/-
श्री सोनू जी सैनी सुपुत्र श्री जोगीराज जी सैनी बहादुरगढ़	500/-
श्री सतीश जी वर्मा ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	500/-
श्री सतबीर सिंह दलाल धर्मविहार बहादुरगढ़	551/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 **द्वारा मयंक प्रिन्टर्स**, 2199/64, **नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली**-110005, **दूरभाष**-41548503, **चलभाष**-9810580474 **से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से** 15 **फरवरी** 2016 **को प्रकाशित एवं प्रसारित।**

समाज के लिए समर्पित रहे बलदेव

जीवन वृत्त

नामः आचार्य बलदेव, **गुरु का नाम**- स्वामी ओमानन्द सरस्वती, **जन्म**- 25 अक्टूबर 1932, **जन्म स्थानः** गांव व डाक सरगथल, जिला-सोनीपत, **शैक्षिक योग्यताः** बी.एससी., **गृह-त्यागः**सन 1959 ई., **गुरुकुलीय शिक्षाः** व्याकरणाचार्य, निरूक्ताचार्य, उपनिषद्, दर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं वेद-वेदांग। **आचार्य पदः** महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर 1962 से 1971 तक। गुरुकुल कालवा, सन् 197i से 2000 तक।

आर्ष-प्रचारकों का निर्माणः योग ऋषि स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी हरिद्वार, आचार्य ज्ञानेश्वर जी रोजड़ (गुजरात), स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (प्रभात आश्रम मेरठ), डॉ. सतीश प्रकाश (अमेरिका), डॉ. शोभानन्द (गयाना), डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व विधानसभा स्पीकर, दिल्ली), आचार्य आर्यनरेश (हिमाचल प्रदेश), आचार्य अखिलेश्वर, ब्र. राजसिंह आदि लगभग 145 युवा ब्रह्मचारियों व संन्यासियों को विशुद्ध आर्ष प्रणाली में शिक्षित कर समाज के लिए अनेक विद्वान एवं उपदेशक तैयार किए।

लक्ष्य एवं उद्देश्यः वैदिक संस्कृति, गोसंवर्धन एवं प्राचीन गौरव को प्रतिष्ठित तथा संवर्धित करना एवं मानवमात्र में वेदज्ञान को विकसित करना।

आचार्य बलदेव और देश और समाज के लिए किस हद तक समर्पित थे। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने 24 वर्ष की आयु में गांव और परिवार छोड़ दिया था। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज और गोसेवा में गुजार दिया। आचार्य बलदेव पिता और भाई की मृत्यु होने पर भी गांव नहीं लौटे थे। आचार्य ने जीवन पर्यत ब्रह्मचर्य का पालन किया। वह धन को हाथ नहीं लगाते थे और क्रोध भी नहीं करते थे।

आचार्य बलदेव के शरीर छोड़ने की सूचना पर उनके चचेरे भाई सेवानिवृत प्रिंसीपल जिले सिंह मलिक, भतीजे वेदपाल और राजपाल भी दयानन्द मठ अन्य ग्रामीणों के साथ पहुंचे। उन्होंने बताया कि वर्ष 1956 में गांव छोड़ने के साथ आचार्य बलदेव ने काम, क्रोध, लोभ और मोह का त्याग कर दिया था। वह अपने परिजनों को भी अन्य लोगों के समान ही समझते थे, उनसे उन्हें विशेष लगाव नहीं था। पिता गूगन सिंह के निधन का समाचार जब आचार्य बलदेव को मिला, तो उन्होंने गांव जाने से इंकार कर दिया। उनका कहना था कि सभी को एक दिन शरीर छोड़कर जाना है। सारा देश मेरा परिवार है और यहां के नागरिक मेरे परिजन है। छोटे भाई की मृत्यु के बाद भी उन्होंने गांव की सीमा में प्रवेश नहीं किया। उनका कहना था कि गांव और परिवार में जाने से लोभ-मोह उत्पन्न हो सकता है।

गोशालाओं के लिए चंदा एकत्रित किया लेकिन धन को हाथ नहीं लगायाः- उनके शिष्य और करीबियों ने बताया कि बलदेव आचार्य ने गो सेवा और रक्षा के लिए जीवन भर प्रयास किया। उन्होंने गोशालाओं के लिए चंदा भी एकत्रित किया लेकिन कभी धन को हाथ नहीं लगाया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि सेवानिवृत प्राध्यापक ओमकुमार ने बताया कि वह कई वर्षो तक आचार्य बलदेव के सानिध्य में रहे। वर्ष 1993 में जींद के एक सेठ ने गोशाला के लिए दान देने के लिए उन्हें एक कपड़े की दुकान में बुलाया था। सेठ ने उनकी परीक्षा लेने के लिए उन्हें नए कपड़े दिलाने का प्रयास किया, लेकिन आचार्य बलदेव ने साफ इंकार कर दिया। इसके बाद सेठ आचार्य बलदेव की गोशालाओं के लिए बड़ी राशि कई गुप्तदान के रूप में दे चुका है।

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक
फरवरी 2016
छपी पुस्तक – पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक–035/2015–17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)–124507

सेवा में –

आधुनिक मशीनों से सुसज्जित नि:शुल्क चिकित्सालय का उद्घाटन्

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि आत्मशुद्धि आश्रम, दिल्ली रोड, बहादुरगढ़, जिला–झज्जर, हरियाणा में लोगों की सुविधा के लिए नि:शुल्क आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित नेत्र चिकित्सालय का प्रारंभ होने जा रहा है जिसका उद्घाटन दिनांक 28 मार्च 2016 को प्रात: 10 बजे किया जायेगा जिसमें कोशिका फाउन्डेशन ट्रस्ट, दिल्ली और वेणु नेत्र शोध संस्थान, नई दिल्ली के अनुबन्ध से पूर्णतया नि:शुल्क नेत्र जांच एवम् आपरेशन केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। जिसमें आधुनिक मशीनों से जाँच कर आपरेशन किये जायेगें और ओ.पी.डी. प्रतिदिन खुलेगी। आस पास के जरूरतमन्द हजारों लोग इससे लाभान्वित होंगे।